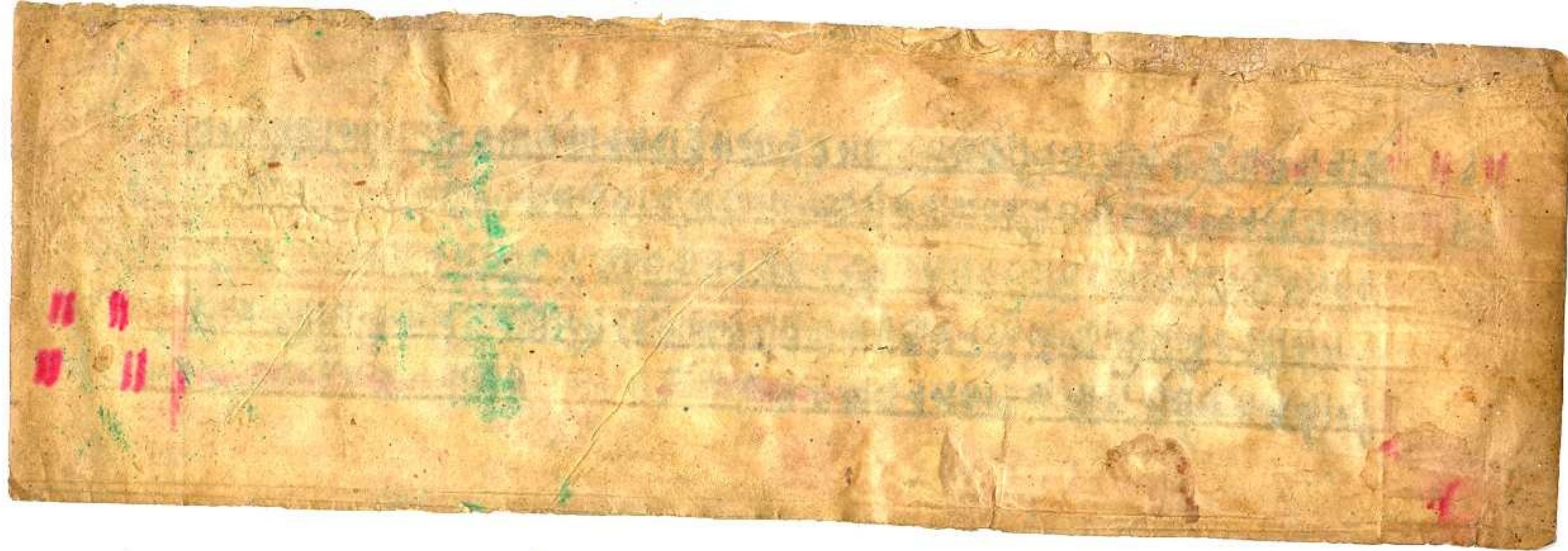




五

三九

२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ सुधागिरि नमो नमः महानन्दार्जु सर्वरुद्रगिनीनां ॥

साधनविधिविस्तृतं प्रवक्ष्यामि ॥ १ ॥ आह गवन्महावज्रध्वजं लोकधिपतिं नदीसंगम
मगानैव कवचं देवायकनं श्रीवज्रध्वजं ॥ २ ॥ अथ वमादिस्नानवृत्ताध्यायः ॥ ३ ॥ देव
सिद्ध्यनियदिनसिद्ध्यनिरुक्तनीनामकल (गमय) रत्नान्नयति ॥ अथ महेश्वरस्य महादे
वस्य श्रीकांक्षाधिपतिं ॥ साधुकावमदान् ॥ साधु २ महादेवस्य लघ्विनिमित्तं ॥ अथ गवन्महा

॥ मन ॥

11911

सर्वरुमावधमनुपदं लायकं स्म ॥ ओं वज्रकालं हन २ सर्वरुमावधं हन ॥ अथ धामिनाधिक
 मार्गं ॥ श्रीवज्रध्वजमकुपादनं कवजकालावलि स्फुटा अरुवत् सर्वरुमावधं हन ॥ नां गवी
 नाधि ॥ धामिनायकवत् सर्वदेवता ४ गजवज्राविष्णु प्रकृत्याय विमिता रुमा ४ ॥ अथ
 सर्वरुमावधं गुरुमवि ॥ धामिनाह ॥ साधु २ श्रीवज्रध्वजमहाकाधधियनिपश्चिभकालप-
 क्षिभसमय सर्वरुमावधं हन ॥ नीयहं कनीति ॥ अथ रुमावधं न न पि मुनसंजी

三

वनीविहानाकर्वधीमकुंलायकस्म ॥ ॐ वडायुधसनसवमिन् ॥ अथास्मिन्लायिकमारु
 धाश्रीवजधननामिकाक ४ महापवनमृगसंजीवनीनिश्चयकिस्म ॥ अथनिश्चयिकमा
 र्ग ६ सर्वरुकरुकिनीनां ६ नीमप्रविगकिप्रविष्टनारु ६ सर्वरुकरुकिन्यस्त्रनिकमूलाप
 यिकुंमहारुयनथनथनायमाना ४ पनिकायरुगवन्पनिजायुरुसृगग ४ रुगवाहा
 पयुरु ॥ अथापनाडिकामहारुनाधिपकिस्मिन्महापर्वमधुल्लउत्कायपादोमिनसा

॥ मन् ॥



हिवन्दित्वा रगवर्कं महाकाधमधिपतिः ४ श्रीविशुवनविजयीपनिजाचरु रगवन्पनिजा
यत्तु सुगणः ॥ ॥ रगवान्वाच ॥ प्रणिपद्य श्वरुर्कं मनूय्याधमं सर्वजन्मुदीपकम
ब्रह्मसिद्धिमाप्नुय्य ददामि जन्मुदीपकमनूय्याधमं नसाय ॥ सिद्धिं ब्रह्ममावाग्धं सर्वं
ददामि किं ॥ हिनः स्वस्वर्गमन्त्रावेकुर्य्यपयनागसूर्यकान्तवन्दकान्तवन्दुगन्धदियूका
मीकलीकनददामि ॥ अथ काधजापिनी च ॥ रविष्यामि ॥ उपस्कापिकारु वामि ॥ सर्व

11

51 52 53

॥ रुद्र ॥

॥ ३ ॥

नथागमजापिनां नत्वं वस्तुगन्धधूपपुष्पाद्युपकनक्षैः सर्वद्रव्या विद्यामानि दत्तामि नाजरुयै
भक्त्यै विषयैः सर्वान्निदानयामि यान् सर्वद्रव्यास्तु विद्यामन दत्तामीति ॥ रुद्रगवानाह ॥ रुद्राणां
अपनाजिनामहारुद्रं ध्वजसंस्थं कृहि मूर्ध्नि ॥ आनन्द ॥ ४॥ लपापकानिर्धामृषावाप्त
दिनानां मवर्धमानं सिद्धिदं ददिसिद्धिं न प्रयच्छति ॥ विद्याधरी रुद्रिनी नागिनी यक्षिणी ॥ लक्ष्मी
का अस्त्री किन्नरी महानगी गन्धारी पिशाची गन्धर्वी धातुदहकः प्रणिहकः काधव ऊधमः

॥ मन्त्र ॥

॥ ३ ॥

हो धीं स्नानयामि ॥ अक्षोच महानवकपातयामि ॥ अथ सर्वकथागमो नवमाद्रुद्राधुः महाकरुपा
धिसूरुषि ममि मनुष्याधी हिताथा यराषरु महावाधिसत्त्वा ॥ प्रणिहक सिद्धि वीर्यवत्त पनाज
मस्त्वै सर्वं रुद्रं नमस्कृत्य धातुक महानाजस्य सर्वस्य चातु महादीपला कक्षा कुसाध
नस्य धर्मचक्रप्रवर्तिनस्य सर्वद्रुद्रस्वविनाशनस्य नानाविधिविस्तृतसाधस्य मद्रामक्तु पदानि महा
काधनाजरुद्रगवानां महाकाधधिपति ॥ अथ धीव रुद्रध्वज महाकाधधिपति ॥ पून न

न २

॥ रुग ॥

॥ उ ॥

॥ श्रीवक्रवचनामाज्ञानधमाश्रयसर्वरुगरुहिनीनीर्किं कनीरुवति ॥ रुगवानाह ॥ यदिस्म
र्थलर्यमलनीर्किमाश्रयसर्वरुगरुहिनीसकुलगात्रविनाशयामि ॥ अथापवक्रिणाव
माह ॥ महादेवसमयनमिष्टामसर्वलोकिकमकुमुदाविधाननसिद्धिददाम ॥ श्रीवक्रव
जापमाश्रयसर्वसिद्धिददामरुहि ॥ यदिनदास्यामसकुलगात्रविनाशकारुवामसर्वरुथ ॥
गनभासनसमयरे ऊंकारुवाम ॥ रुगवाक्राधवक्रमूर्धनस्त्राययकीचुमवमव

॥ मव ॥

॥ उ ॥

धी ॥ अष्टमहानवकप्रतिष्ठावाम ॥

॥ अथागर्शवक्रमिष्टाधनमृथाक्रम ॥

नदीकुलधमभानवावक्रपाशिग्रहमथ ॥ रुगरुहि ॥ सर्वसिद्धिनिनाकुसंक्षय ॥ अष्टम
हारुगवाह्राधमधन ॥ अथमूर्धाप्रवक्ष्यामि ॥ अष्टरुहिनीसाधन ॥ नामरुगनदरुमूर्ध्नि
त्वामधमाकुप्रसावय ॥ श्रीवाक्रमूर्धनीमूर्धाकुलसाधनी ॥ अथनान्यमूर्ध्नि ॥ अर्क
मूर्धनीकुप्रसावय ॥ सिद्धारुगुरुहि ॥ अष्टममयपालिनी ॥ वामरुग

॥ रुम ॥

॥ ७ ॥

नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा
लिनी ॥ ३ ॥ वामरुम नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा
धीमूडा सिद्धि रुमानुसा विधी ॥ ४ ॥ वामरुम नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा
नाव द्रुय नाव द्रुय सर्व रुमिनी वर्ष कवी मूडा ॥ ४ ॥ वामरुम नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा
कानुपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा ॥ ५ ॥ वामरुम नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा

॥ मय ॥

॥ ७ ॥

रुमिनी अहिमुखी इर्ज निरुयं कवी ॥ ५ ॥ वामरुम नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा
आकन्य कानुपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा ॥ ६ ॥ वामरुम नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा
पृथक् पृथक् दे जिधी रुमिनी दे जिधी क द्या न्यसि ॥ वामरुम नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा
वृरुमिनी समय मूडा ॥ ७ ॥ वामरुम नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा
रुमिनी समय मूडा ॥ ८ ॥ वामरुम नदरुमसिसेयुर्कं गऊनी उपसानय नुसि चोत रुमरुमिन्प नरुधं आत्मसमयपा

॥६॥ ४ समय सम नि काम नि ॥ ~~अननका धस हि न ना क व्यज प न~~ ॥ ~~अंक ह क ह मुं जीं ४~~ अम क ह नि
 ॥८॥ नी हं रुट् ॥ ~~अननका धस हि न ना क व्यज प न~~ ॥ अ प रु न ४ श्री ध मा ग रु नि ॥ य दि ना ग रु नि मृ दि
 स्तू ट नि शु व्य नि मि य न वा ॥ ॥ ~~अथ सा ध नं रु व नि~~ ॥ न दी र्ग मं ग त्वा च न्द ने म धु
 ल कं कृ त्वा पु ष्य प्र क र हं द्वा गु र्गु न धू र्प द ह द व स ह स अ प ति धो रु व नि ॥ पु न ध्वा श्री र ॥ म न ॥
 ह मा हं अ प ति य मा न मा रु नि ॥ आ ग मा या ध्वा न्द ना द के ना र्घी द य ४ का म प्र द रा र्घ्या रु व ॥ ८ ॥

नि ॥ स र्व र्थ प ल क र्ये क्ष य न व पि ष्य ग्ध प्र रा व ग रु नि ॥ न र्व दि न दि मा सा द य नि अ र्थ न व
 नि य र्ग ति च नि ॥ ॥ ~~न दि रु ल ग त्वा च न्द न न म धु ल कं कृ त्वा द धि रु क व लि द प य~~
 ॥ अ व स ह स अ प ति स फ दि व धा नि या व रु ४ स फ म दि व नि य न मा रु नि ॥ आ ग मा या ध्वा
 न्द ना द के ना र्घी द य ४ रु व नि ॥ रु व व द नि व त्स किं म या क रू व्य मि नि ॥ सा ध के न
 व क व म्म श म द ही नि ॥ सा वा शं द द नि सा वा द्वा ॥ म पि धा व नि ॥ व रु ली का व रु ज ना ॥

॥ ५॥

दिशुप्रयच्छति ॥

॥ श्रीवक्रवर्गपुत्रगत्वाचन्दननमस्तु लैर्वा कृत्वा कचवीचपु

॥ ६॥

र्षदद्यात्तु गुग्गुनधूपनधूपयत्तु अक्षसहस्रं जपत्ति हारुवति ॥ पुनवाशोसहस्रं जपत्ति यममागच्छति ॥ आगमया ४ कुसुमासनवकव्यम् ॥ आगच्छति वकव्यम् ॥ राया रुवस्वति ॥ दिव्यचरनसायनानिमिद्धि इव्यानि ददाति ॥ सर्वथा कुतः शानयति पृष्ट ॥ मानाप्पस्वर्गमविलयति ॥ दशवर्षसहस्रादि जीवयति ॥ यदि कर्तव्यगत्वाचन्दनन

॥ मच ॥

॥ ६॥

मस्तु लैर्वा कृत्वा ॥ ५॥ गन्ध ॥ ५॥ नपुष्पनस हस्तु चकधूपादय ४ अक्षसहस्रं जपत्ति हारुवति ॥ पुनवाशोसहस्रं जपत्ति यममागच्छति ॥ आगमया ४ पुष्पादकना धादय ४ वकव्यरुगि नीरुवस्वति ॥ यमनसायनसिद्धि इव्यादि ददाति ॥ याजनसहस्रादपि क्रियमानयित्वा ददाति ॥ ॥ ५॥ यदवायननगत्वाय ॥ ५॥ कवलिपुजा कृत्वा पुष्पप्रकर्षं गुग्गुनधूपे दत्वा अक्षसहस्रं जपत्ति हारुवति ॥ पुनवाशोवलि दत्वा सहस्रं जपत्ति यममागच्छति ॥ आ

॥ ८८ ॥ गणेशकामयि नम्यराय्यारुवति ॥ दिनदिन दीनानां कैः सुखं ददाति ॥ पृथुमानाप्यमत्र
॥ ९० ॥ मपिनयति ॥ पुनत्रपि वाञ्छं ददाता जक त्याम्बानीय ददाति ॥ पंचवर्षसहस्रादि जीवति ॥
यदाश्रियं नवाजकुलजायते ॥ ॥ नदीसंगमगत्वामासाहानक्षकववीचपुष्पीद
शास्त्रगुरुनुधूपनधूपयन्मृदुसहस्रं जपसिद्धारुवति ॥ पुनवाञ्छोददाता पूजां कृ
त्वाष्टमप्रदीपं प्रजाल्य सहस्रं जपन् ॥ पंचवर्षसहस्रं नयिपनिवाचनमहान्पुत्रवध

मन ॥
॥ ९० ॥

नागकृति ॥ आगच्छ चरुणा वनकामयि नम्यराय्यारुवति ॥ यदिपनिहाचैकनामिने विनश्यति
॥ दिनदिपृथुमानाप्यस्वर्गमपिनयति ॥ पुनत्रपि वाञ्छं ददाति ॥ पंचवर्षसहस्रादि जी
वति ॥ ॥ नदीकुलगतार्कं कृमनमधुलकं कृत्वा मृगुनुधूपनधूपयन्मृदुसहस्रं जप
सिद्धारुवति ॥ पुनवाञ्छोददाता पूजां कृत्वा सहस्रं जपत्स्वयमेवागच्छति महान्पुत्रवध
कृत्वा ॥ आगच्छायाध्वनादकनार्घ्यं दयश्चुष्टारुवति ॥ वत्सकिं मया कर्तुमिति वाचं ददा

धूपन ३

॥ रुक्म ॥ नि साधकेन वक्तुं यमाह रुक्मस्विति ॥ माह रुक्मस्विति पालयति ॥ पंचभास्विति वाचस्य कुलं रुक्मिपति
॥ १९ ॥ वस्त्रादिप्रतिदिने ददाति ॥ दशवर्षं मरुत्प्राप्ति जीवति यदा मृत्युं वा म्रशकुल जायते ॥
॥ नदीसंगमगत्वा उदाची वलिपूजा कृत्वा घृतप्रदीपं प्रजाल्य सकल बाधे उप
रुगाहं वासि समये रुक्मिणी महाकर्मप्रसादं कृत्वा गच्छति ॥ वत्सकिं मया कर्म बाधितिवद
ति साधकेन वक्तुं यमाह रुक्मस्विति ॥ दशवर्षं मरुत्प्राप्ति जीवति यदा मृत्युं वा म्रशकुल जायते ॥
॥ १९ ॥

॥ मन्त्र ॥
॥ १९ ॥

दाति दशवर्षं मरुत्प्राप्ति जीवति यदा मृत्युं वा म्रशकुल जायते ॥ दशवर्षं मरुत्प्राप्ति जीवति यदा मृत्युं वा म्रशकुल जायते ॥
मन्त्रं नुवाज ३४ रुक्मनाम्ना कल्प ४ प्रथमं दद्यात् ॥ ॥ अथ मन्त्रान् प्रवक्षिमीमहा
रुक्मिणी उक्त्वा यत्नगवर्तं धीवत्तु धनस्य पादोष्णि वसीवन्दितास्वस्वद्वयं मदाह ॥
ॐ श्रीं ह्रीं ॥ ४५ ॥ नमो दयं ॥ ॐ ह्रीं क ॥ ४६ ॥ सर्व रुक्मान्नामय ४ सर्व कथा गम समय मनूपा लय
हन २ वन्ध २ आर्जुन मथ रुक्मामहा नोद्र ४ मन्त्रान् प्रवक्षिमीमहा नवाग्निनी आगच्छ श्रीं धीं धीं रुक्म ॥ ४७ ॥

॥ ११ ॥

॥ नवासिनी आकर्षधमनु ४ ॥ ओं धृनु २ विधुनु २ खल २ चालय २ प्रविधाय २ हन २ तिष्ठ २

॥ १२ ॥

समयमनुपालय २ रा २ म ॥ न प्रवक्षिनी हं २ रुद्र २ स्वाहा ॥ १ ॥ ॥ न प्रवक्षिनी

महा रुक्मिणी समयमनु ॥ ॥ ओं खल २ धृनु २ महारुक्मिणी साधयं कुरु २ प्रविधाय २

विधाय २ कट २ जल्य २ रु २ व २ ग २ हं २ रुद्र २ की २ स्वाहा ॥ देव कबाली ॥ ओं धा ॥ मन ॥

नमस्वी ॥ नवासिनी साधकान्कूल प्रपति रुक्मिणि दायिनी ॥ ओं ओं ओं नमः २ स्वाहा ॥ धाव ॥ १२ ॥

॥ नमस्वी ॥ ओं ऊं ऊं नमस्वी चिचि २ विन विनार्चि य सर्व २ ऊं रुयं कवी हन २ द ह २ प

व २ मानय २ ममा काल म् ऊं रुयं कवी सर्व नागरुयं क ज हृ ह्रा सिनी सर्व रु रु

विधा था था था वा वा वा वा ओं ओं ओं स्वाहा ॥ ऊं नमस्वी ३ ॥ ओं कमल नी वनी मनु

यवत्स न सर्व २ १ रवि नासिनी साधक प्रिय ऊय २ दिव्य नृपिणी की १ गृ की य ऊ ऊं

१ हं २ रुद्र २ नमः २ स्वाहा ॥ कमल नी वनी ४ ॥ ओं रुद्र नमस्वी देव कबाली रुलि

लावनी २

॥ ५ ॥

कनालिमुडा २॥ रामहस्तमुष्टिं कृत्वा मध्यामा लुप्रसावयेत् ॥ गर्जामुखीमुडा ३ अस्या ॥

119811

वसुधायामध्वमारुग्नानामिकांप्रसावयन्ना कनकवृक्षा ४ अस्यावसुधयाभूनामिकांप्रवक्ष्य

कानि शान्दु प्रक्षानयन् भाविकदमूरी मूडा ५ भाद्रपदकर्मसुष्टि कृत्वा नरुनी प्रक्षानयन्

॥ धूधानी मूडा ॥ भुल्या जव मूड या न ऊनी कृश्य मध्यमो प्रवरुय्य ॥ विष्कनाली मूडा

गंगादेवि हस्तमूर्ध्नि कृत्वा कनिष्ठान्युसार्य मीन्यन्स्वीनुद्रा ग ॥ ६५ ॥

॥ मन् ॥

119811

॥ यन्निवाक्षिनीरुग्निनीमूडालज्जधविधिविस्तनगन्तु ४॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

नाऊ भूक्षो महात्मनः प्रवृत्तिनी साधनं व्याख्यास्यामः ॥ १ ॥ दिवा भाहिगार्थयवटीसा

धनमूलमै॥४॥ नंगत्वास्तु सहस्रं जपेत्पूर्वसं वा कृणोतु वरि॥ गणसाधनमानरुद्रनाथ॥

४५॥ नैगत्वा स्वदिनसमिधे दधिमधे घृणाको नामेष्टु सहस्रं शृङ्गया ॥ नैग ४५॥ नैग

वशिनीभी घुमागच्छति । किंकशमीनिवदति । साधकनेत्रे केषु किं नीरुवस्थति । अथवा

॥ १८१ ॥ धुनधीमहादेवाधिपगं ४ पादो भिनसावन्दि ॥ ॥ त्वा म ह द यं म दा न ॥ ॐ हूं २ रुद्र स्वा
॥ १८२ ॥ हा ॥ म न का ष्ठा य धी ॥ ॐ रुद्रान हूं रुद्र स्वाहा ॥ म हा का ष्ठा य धी २ ॥ ॐ हूं २ रुद्र २ स्वाहा
 ॥ नो ड का ष्ठा य नी ३ ॥ ॐ रुद्र हं रुद्र नी भू इ हा सि नी सा क ध प्रिय महा वि वि षु प न स्वा क नि
 सु व धु हं रुद्र य म नी रुद्र नी सर्व इ श व प्र ष म नि ॐ ॐ ॐ ॐ हूं हूं हूं हूं धी घं सि धिं प्र य क हूं ४ ज
 स्वाहा ॥ व धु का ष्ठा य नी म हा रुद्र नी ४ ॥ ॐ य म नि रुद्र नी भू का ल मृ त्यु ना भि नी र व ज्ञ

॥ म न ॥
॥ १८१ ॥

वि रुद्र न हं रुद्र धी घं सि धिं दे हि म सा ध क मा ष्ठा य नि रुद्र ४ स्वाहा ॥ रुद्र का ष्ठा य नी ५ ॥ ॐ हूं
 म रुद्र धु लि नि र्वे क ४ द्वा ल ४ सर्व रुद्र रुद्र मि नी दि व्य म हा रुद्र धु ली रुद्र पि न म थ २ नि रुद्र ग वा ना
 ष्ठा य नि ४ स्वाहा ॥ रुद्र धु न का ष्ठा य नी ३ ॥ ॐ रुद्र रुद्रि मू र्खी ग हि धा व ज ल २ रुद्रा स २ न म
 र्वी आ ग रुद्र र वं ना डा का प नी आ वि ४ २ हूं २ रुद्र रुद्र रुद्र रुद्र रुद्र रुद्र ग वा ना ष्ठा य नि ४
 स्वाहा ॥ रुद्र मू र्खी का ष्ठा य नी ७ ॥ ॐ रुद्र न वि ध दि व्य ला च नी का म रुद्र नी ज ग म्ना हि नी रुद्र

४ रुग ॥

॥ १० ॥

रुगकोशमालाविश्विनीनृपुनश्चरुनश्चविश्वमिश्रमिश्रसाधकप्रियदीश्वराहा॥
रुगकाश्यायनीट॥ ~~रुगकाश्यायनीविद्यापठिगमोर्ध्वमिश्रमिश्रमि~~ ॥ ॥ ~~अथानाप~~
नमनहस्यागिनहस्यरुगतामनमहानकुनाऊं अथोकाश्यायनीमृडा लज्जध्वारव्यासा
म॥ ~~अथानाऊंलिमव~~ शानऊंनीप्रसार्यकेशयग॥ ~~मलकाश्यायनीमृडा १ ॥ अथाना~~ ॥ मन ॥
कनिर्गकृत्वागऊंधीद्वयकृऊंनी॥ ~~महोकाश्यायनीमृडा २ ॥ अथाना~~ ॥ १० ॥

माऊंलिमुखसंगताकनिष्ठाप्रवक्ष्यसर्वरुगिनीमानदकुलनाशनसाधप्रियकुलरुगव
मि॥ ~~नीडकाश्यायनीमृडा ३ ॥ अथाना~~ मृडयाधीषेमिश्रमिश्रमि ॥ ~~मृडा ४ ॥ अथाना~~
थकृगऊंनीप्रसानयग॥ ~~रुडकाश्यायनीमृडा ४ ॥ अथाना~~ धूपप्रव्येदीपमत्समानवलि
नथा॥ ~~तापयसर्वरुगिन्प ४ व~~ गिरुवमिगऊंनी॥ ~~उरुमृडा ५ ॥ अथाना~~ कृष्णरुऊंनीद्वयव
ष्टयग॥ ~~रुगिनीवन्धक~~ कुलकाश्यायनीमृडा ५ ॥ ~~नथेवा~~ किरुटनीचधुकाश्यायनी

॥ रुग ॥ महासर्वरुगिनी साधन मूडा ३ ॥ ~~गामरुग~~ मुखे कृत्वा प्रसाध्य गङ्गी नी सर्वरुगिनी साधने
॥ १८ ॥ डावनी याग ॥ ~~गङ्गी मूडा~~ कलन य साधनी जय मुखी काश्यायनी मूडा १ ॥ ~~सर्वरुग~~ वरुणी
 जय काश्यायनी मूडा ॥ अन्धान्य मुखे कृत्वा कनिष्ठा द्वय वक्ष्ये ॥ प्रसाध्य गङ्गी न्य भुञ्जी
 कृच्छ्र अस्म गङ्गी ॥ जैलाया कर्षणी मूडा स नूड वस्त्र साधनी ॥ किपुन कृच्छ्र रुगिनी साधनी
 देव साधनी ॥ रुकाश्यायनी मूडा श्री सिद्धि ४ प्रदायकार ॥ ~~रुग~~ रुग गवान्महा कौष

मच
 १८

धिपति ४ रुगि रुग ठामन महा गन्तु नाज अक्ष महा काश्यायनी मूडा लज्ज विधिविस्तन
 गन्तु ४ ॥ ॥ ~~अक्ष~~ रुग ठामन मस्या गिन रुस्य रुग ठामन महा गन्तु नाज अक्ष रुग काश्या
 यनी साधनं चारव्यास्पाम ॥ रुग रुग सर्व रुग गि महा काश्यायनी साधने रुगि ॥ रुमठाने
 ला अक्ष गगाया ४ कपोल नूधिन स पृथु मघदि य रुग रुग रुगि वेस किमया कर्कष्य
 ॥ साधक नव कर्ष्य मागारु वस्त्रि ॥ मागारु वस्त्रि पालय गि धने गि ना र्क्षि दद गि ॥ सर्व सि

॥ रुग् ॥ पतिपुत्रयमिमहाधनपतिरुवमिः पंचवर्षक्षानिजीवयन्नियंदासृयगनाजकृतेजाय
 ॥ १८ ॥ नः ॥ ॥ अथ श्रीवज्रधनगृहं अथ सहस्रं ऊपरुगं ४ पूर्वमवाकृगारुवमिः ॥ नाशो वज्र
 धनगृहं ऊपरुगादिव्यमिन्नूपैष रथमिः ॥ यवनमिन्नूनिगम्वेनन्ददागिः ॥ ॥ नाशो
 वेकमिर्गंगत्वा अथ सहस्रं ऊपरुगं ॥ एकदिवसं पुनः ४ अथ ॥ दिगीयदिवसादि ॥ मन ॥
 व्यम्भीपुनः नक्ति रथमिन्नू वयमिन्नू यगं ॥ रुगीयदिवसं वलीरायगं ॥ ॥ १९ ॥

स्थापयसि ॥ साधकनवकाव्यं रादवर्ग उपस्थापिकारुवमिः ॥ यावज्जीवमिकालं सर्व
 दायिकारुवगं ॥ ॥ अथ श्रीवज्रधनगृहं अथ सहस्रं ऊपरुगं ४ पूर्वमवाकृगारुवमिः ॥ नाशो वज्र
 धनगृहं ऊपरुगादिव्यमिन्नूपैष रथमिः ॥ यवनमिन्नूनिगम्वेनन्ददागिः ॥ ॥ नाशो
 वेकमिर्गंगत्वा अथ सहस्रं ऊपरुगं ॥ एकदिवसं पुनः ४ अथ ॥ दिगीयदिवसादि ॥ मन ॥
 व्यम्भीपुनः नक्ति रथमिन्नू वयमिन्नू यगं ॥ रुगीयदिवसं वलीरायगं ॥ ॥ १९ ॥

॥ २१ ॥ गिः वसवसायनेददामिः अथ ४४ न पनि वा न धवकुलीका न राजनानि च ददामिः प
 ॥ २१ ॥ चवर्वसहस्राधिजीवयन्तिः यदा नृयगे नाजकुलजायगे ॥ ॥ नानो नाजकुलजायगे ॥
 वा अथ सहस्रं यजपत्न्यं सर्वसाकगारुवन्ति ॥ पश्यन्ती नलो कनवीनका दैवमिंप्रजात्य
 मालगी पृथ्वी दधिमधू घृणार्क नाथ सहस्रं यजपत्न्यं ॥ मन्त्रं नृवनीरु नवाही प ॥ मन ॥
 ॥ २१ ॥ अथ गिः पनि वा न धमहान् पुनः ४४ न धी प्रमागच्छन्ति ॥ शगमाया ४ कुसुमादकनार्थी ॥ २१ ॥

दयः ४४ वक्रा व्याश्रुनारुगिनी शार्थारुवन्ति ॥ यदि मागारुवन्ति विरुन इषयमि
 दिव्यकामिकरुजनंददामिः ॥ यदि शार्थारुवन्ति सुवधुर्लिका नंददामिः ॥ यदि रु
 गिनीरुवन्ति नार्थददामि योजन ४४ नोदपि क्रियमानां यददामि ॥ यदिकारुव
 मिदिव्यक्रिसृष्टिकामरुगंददामि सर्वासा पनि पूनयमि ॥ दधवर्वसहस्राधिजी
 वयन्ति ॥ यदा नृयगे नाजकुलजायगे ॥ ॥ अथ पृथु मासीद ४ सहस्रं यजप

॥ २३ ॥ कामिः। वनः ४ सुवर्धुमः पत्न्ययः कृमिः १ नगः मानसीदागव्यदिनः गङ्गा मिश्रजि
 नृर्द्धिः स्फुटः मिश्रियः नवाः ॥ अथ महर्षिना महादेवाश्च नैकविश्याधनवचरिपनिवृत्तीसप
 निवाचान् अनेकाश्च नयजनागकिन्ननमहीनगान् अनेकनियुक्तान् सहस्रान् नृणाम्
 पर्यन्तं धुलं श्रीवज्रधनमहाक्राधाधिपः कृष्णदक्षिणीकृत्यपादोभिनसौ वन्दित्वा ॥ नव ॥
 रगवन्तं भगवन् महादेवावगन् ॥ राघवं महाबाधिसत्त्वाः प्रणिहन्तः ॥ सन्त्यजं धनुकम् ॥ २३ ॥

हानाजस्य सर्वरुग्नागयज विशाधनानीरुयंकचस्य सर्वविघ्नविनायक इष्टवज्र
 विनाशनस्य सर्वग्रहवन्तः कटपूटनादिमानेष्टस्य सर्वनेहस्य मधुलसाधनीस्य
 ॥ अथ पर्यन्तं धुलं महेष्टीकृमालरुग्ना नमहाबाधिसत्त्वं नरुग्नाधनमहादेवस्य सा
 धूकानमदान् ॥ साधुः २ महादेवपत्निभक्तलपेक्षिभक्तमयि जाम्बुद्वीपकानीमन्
 ध्यानाहिगार्थसर्वरुग्नागयज किन्नचवगिसाधनवकुं महाक्राधाधिपः मधु

॥ रुग ॥ नै॥ प्रथम पुरस्च॥ **॥ वाचमधुलक** **॥** व पूजा देवीयथाक्रमे॥ सीलितकनकवर्धु
॥ २५ ॥ सर्वो लंकानरुपिर्गै॥ ४४ षड्वसिन्नागधरुगवर्त्तनिनी जमान्॥ कोधस्य वामहागधउमाद
 वी नृपहस्तका॥ कोधस्य पुनगालव्यधी देवी प्रहस्तका॥ कोधस्य दजिह्वागालप्रिनारु
 मीसमालिखेत्॥ गृहीतधूपहस्तसर्वो लंकानरुपिर्गै॥ कोधस्य पृष्ठहागवमक्षिद
 वीसमालिखेत्॥ गृहीतदीपहस्ता हिमिषिकुलविरुपिर्गै॥ अग्नेन त्रिभुवनिख्यत **॥ मन ॥**
॥ २५ ॥

हीनगन्धहस्तका॥ नेर्जयमालिखेद्देवीसनस्वनिवीधहस्ताअनेकगीतवाद्यादिनृत्यपा०
 स्रुगपिगा॥ वायुव्ययजिधीलिख्यगृहीतनत्तमालिकासूनसूदनीनाम्नाचसर्वयजिध
 वीस्मृगा॥ नेक्षान्मामालिखेद्दुर्गिमारुतिनागरुपिर्गै॥ सर्वरुगेधनीनाह्नीसर्वो लंकान
 रुपिर्गै॥ चालूवकुर्विष्मन्तो जीनृपयोवनमन्दिनीसूवर्धुवर्धुसंकाक्षानीलकुक्षि
 नमूर्द्धगावासर्वाजै॥ ४५ रुनीदेवीसाधनाकुलसूयीयाद्विनीयपुरस्च॥ **॥ पुरस्च ॥**

॥रुग॥

ने॥प्रथमपुटस्य॥

॥वायव्यधुलक॥ व पूजादवीयथाक्रमे॥संलिखत्कनकवर्धु

॥२५॥

सर्वोत्तमरूपिणं॥ ॐ वदसि नालाधरुगवर्णनिनी जमान्॥ कोधस्यवामहागदोउमाद
वीनृपहस्तका॥ कोधस्यपुनगालव्यधीदवीपुहस्तका॥ कोधस्यदक्षिणगालप्रिनारु
मीसमालिखेत्॥ गृहीतधूपहस्तसर्वोत्तमरूपिणं॥ कोधस्यपृष्ठगालवमक्षिद
वीसमालिखेत्॥ गृहीतदीपहस्ताहिभिर्विक्रलविरूपिणं॥ अथनतत्रधियतिरव्यय

॥मन॥

॥२५॥

हीनगन्धहस्तका॥ नेर्जयमालिखद्दवीसनस्वनिवाधहस्ताअनेकगीतवाद्यादिनृपपा०
सुराविना॥ वायव्ययजिधीलिख्यगृहीतनतत्रमालिकासूनसुन्दरीनाम्नाचसर्वयजिध
नीस्मृता॥ उ० आन्यामालिखद्दुग्निमारुगिनागरुपिणं॥ सर्वरुगं ध्वनीनाह्नीसर्वोत्तमरूपि
रुपिणी॥ चालूवकुर्वि० आलोकीरूपयोचनमन्दिनीसुवर्धुवर्धुसंका० नीलकुशिर
गन्धर्वावासरुजि० आ० नीदवीसाधनाकुलस्त्रीयादिनीयपुटस्य॥

॥२५॥

॥ २७ ॥ दवगा ४॥ गग ४ श्रीमहाकाठ मूर्त्तौ वक्राप्रविष्टवैकुण्ठमाग्नः ॥ हं वक्ररुद्र ॥ एवमूर्त्तानि
॥ २८ ॥ नमार्जुनधस्वयं काठप्रविभक्तिगग ४ भिष्यप्रनमयन् ॥ नीलवस्त्रधाम्मुखवर्धकृत्वा
 धमूर्त्तौ वक्रामूर्त्तिस्त्वाप्यवक्रादकं मुखदापयन् ॥ ओं गिरिजसिद्धिहं ॥ श्रुतनस्त्वापयन्
 ॥ गग ३० प्रविभक्तिधैरुं हं हं हं ॥ श्रुतनमन्त्रेण कोधावधमन्त्रेण कोनध
 सुभद्रमप्यावधयन् ॥ श्रीगणानागग वरुमानैकथयति ॥ गग ४ पूज्यादिनिर्दिष्टरुगा

॥ मन ॥
॥ २७ ॥

महामधुलप्रविविधिविस्तृतकथा ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 मुखवर्धमूर्त्तौ कुलदवर्गादर्शयन् गगानामारिषकाद्यमूर्त्तौ श्रिभिस्ययन् ॥
॥ गिरिगतामनगन्तुना ॥ सिद्धिमहामधुलमन्त्रविधिविस्तृताख्यगि ॥ प्रथमं गावह
 यचन्द्रमधुलैरावयन् ॥ मधुलैकानं जालामालाकुलप्रलैरावयन् ॥ हृदं मन्त्रमूर्त्तान
 यन् ॥ ओं सिवयहं ॥ गग ४ सर्वपापविनाशनमन्त्रमूर्त्तौ नयन् ॥ हृदयचन्द्रमधुलैरा
 त्वाकुण्ठवहं विन्दुसहिगं जालामालाकुपृणं मन्त्रमूर्त्तौ नयन् ॥ पुनरुधुस्फटिकारुणायि

॥ २८ ॥

॥ २९ ॥

विरूपपद्मगङ्गा गङ्गा पद्मपद्म विविचिन्त्यगन्तुं कानेक्षा लामालाकली चिन्तयन् ॥
ॐ क्रोधावधौ हं हं हं ॥ गङ्गा ४ क्रोधावधौ मूढावधौ ४४ दं मनु मूढावधौ ॥ ॐ वक्रा
वधौ ॥ ॐ वक्रावधौ पादौ ॥ गङ्गा स्वदेवगा काय विविचिन्त्यगन्तुं ॥ गङ्गा ४ क्रोधावधौ पादौ क्रोधावधौ
मूढावधौ ४४ विविचिन्त्यगन्तुं ॥ ॐ हन श्वक्र हं ॥ भिन्नभिन्ना ॥ ॐ दह श्वक्र हं ॥ भिन्ना
या ॥ ॐ दीप्तवक्र हं ॥ न प्रया ॥ ॐ वक्रावधौ ॥ हृदय ॥ ॐ दह वक्र हं ॥ कवच ॥ ॐ

॥ मन ॥

॥ २९ ॥

हनदह पचक्रोधावधौ सर्वदृष्टान्मानय हं रुद्र ॥ अर्चु ॥ अर्चु क्रोधावधौ स्वयत्तुं वि
न्त्यासौ ॥ गङ्गा मधुलद वगा हृदयमाका नयन् ॥ अर्चु ॥ अर्चु क्रोधावधौ स्वयत्तुं वि
श्रिता ॥ अर्चु ॥ मूढावधौ मनु धवि या जयन् ॥ ॐ वक्रावधौ महाक्रोधावधौ मनुपालय ह्री
घमागन्तुं ४४ हं रुद्र स्वाहा ॥ अर्चु ॥ नमः सर्वदेवगा मावीर्ययन् ॥ ॐ सर्वदेवगा
सिद्ध ॥ ४४ ॥ अर्चु ॥ ॐ नाभय सर्वदृष्टान् नदह पचरु धिमे कुरु ॥ २ रुद्र ॥ अर्चु पमनु

॥ ६० ॥

॥ ३० ॥

नाऊ सिद्धिमहामधुलमन्त्रविधिविस्तनगन्तु ॥ ॥ अथानीरुगतामनगन्तुनाऊ
महामधुलमन्त्रात्तजधविधिविस्तनीरुव ॥ अथान्यागुं सिवद्वानर्कनीदयप्रसानयरु
ऊनीरुवीकृत्वापमासनमूडा ॥ १ ॥ अथान्यमूर्धिरुत्वागर्कनीदयवैद्यग
॥ जोधवैद्यमहामूडागुंलीकृजधमावठग ॥ २ ॥ अथयउर्जमूडारुवनि ॥ अथ
न्यमूर्धिरुत्वागर्कनीगुल्योप्रसानयग ॥ निनामूडा ॥ १ ॥ अथान्यमूर्धिरुत्वागर्कनीगुल्योप्रसानयग ॥ निनामूडा ॥ १ ॥

॥ मन ॥

॥ ३० ॥

धमार्जुनोप्रवैद्ययरुऊनीरुवीकृत्वाभिषाममूडाम २ ॥ अथान्यमूर्धिरुत्वागर्कनीगुल्योप्रसानयग ॥ निनामूडा ॥ १ ॥
पोर्धनदजिधनगुंवामार्जुनोप्रवैद्ययरुऊनीरुवीकृत्वाभिषाममूडाम ३ ॥ अथान्यमूर्धिरुत्वागर्कनीगुल्योप्रसानयग ॥ निनामूडा ॥ १ ॥
कृत्वाकनिद्वयवैद्ययरुऊनीरुवीकृत्वाभिषाममूडाम ४ ॥ अथान्यमूर्धिरुत्वागर्कनीगुल्योप्रसानयग ॥ निनामूडा ॥ १ ॥
यागर्कनीरुवीकृत्वाभिषाममूडाम ५ ॥ अथान्यमूर्धिरुत्वागर्कनीगुल्योप्रसानयग ॥ निनामूडा ॥ १ ॥
द्वमूडा ॥ ६ ॥ अथान्यमूर्धिरुत्वागर्कनीगुल्योप्रसानयग ॥ निनामूडा ॥ १ ॥

॥ २८ ॥ अन्त्यान्पमूर्ष्टिं कृत्वा अंगुष्ठोपसानयन् आ ऊपमूडा ॥ २ ॥ अन्त्यान्पमूर्ष्टिं
 ॥ ३१ ॥ कृत्वा पृथक् पृथक् कृत्वा मवामगङ्गीनीपसार्यवाहमूलस्कापयन् ॥ दक्षिणांगुष्ठेन
 कनीयनीसीनखमाक्रम्य अर्धगुलिप्रसानदक्षिणवाहमूलनेनित्रिपन् ॥ दिक्
 वन्धमूडा ॥ ३ ॥ अथ महादेवमूडारोवनि उक्तानम ऊर्लि कृत्वा गङ्गीनीद्वयं ॥ मन ॥
 कार्ग्यं कुर्यात् ॥ नृदस्य रगमूडा ॥ १ ॥ उक्तानम ऊर्लि कृत्वा गङ्गीनीद्वयं ॥ ३१ ॥

वक्ष्याकुर्यन् ॥ नाना यथास्य षीखमूडा ॥ २ ॥ अन्त्यान्पमूर्ष्टिं लिख्य कनिष्ठीप्र
 सानयन् ॥ प्रजापते ४ कमधुलुयडा ॥ ३ ॥ वामहस्तमूर्ष्टिं कृत्वा मध्यमार्गुलिप्र
 सानयन् ॥ काश्च ३ मथन ४ क्रि मूडा ॥ ४ ॥ वामहस्तमूर्ष्टिं कृत्वा गङ्गीनीमध्यमार्गु
 लीगङ्गीनीसीकुर्य मध्यमार्गुलिमध्यपर्वधानयन् ॥ गङ्गापते ४ पनधु मूडा ॥ ५ ॥
 उक्तानम ऊर्लि कृत्वा स्वस्तिकं गङ्गाकानयन् ॥ वामकनीयसीरग्न अर्गुष्टमूर्ष्टिस्काप

॥ ३१ ॥ यत् ॥ वा मा र्जुं हृत्सिद्धिं दत्ति धा र्जुं हृत्सपि आदिश्यते यत् ॥ ३ ॥ ~~॥ दत्ति धा र्जुं हृत्सपि ॥~~
 ॥ ३२ ॥ ~~॥ दत्ति धा र्जुं हृत्सपि ॥~~ यत् ॥ कुं न्यनामिका र्जुं हृत्सपि नाहं यत् ॥ ७ ॥ ~~॥ दत्ति धा र्जुं हृत्सपि ॥~~
 हृत्सपि वा मा र्जुं हृत्सपि हृत्सपि कुं न्यनामिका र्जुं हृत्सपि नाहं यत् ॥ ८ ॥ ~~॥ दत्ति धा र्जुं हृत्सपि ॥~~
 सी अनामिका र्जुं हृत्सपि नाहं यत् ॥ ९ ॥ ~~॥ दत्ति धा र्जुं हृत्सपि ॥~~
 थ के नीयसी व यत् ॥ १० ॥ ~~॥ दत्ति धा र्जुं हृत्सपि ॥~~

॥ ३३ ॥ ~~॥ दत्ति धा र्जुं हृत्सपि ॥~~ हृत्सपि वा मा र्जुं हृत्सपि हृत्सपि कुं न्यनामिका र्जुं हृत्सपि नाहं यत् ॥ १ ॥ ~~॥ दत्ति धा र्जुं हृत्सपि ॥~~
 रुवनि ॥ स हृत्सपि नाहं यत् ॥ २ ॥ ~~॥ दत्ति धा र्जुं हृत्सपि ॥~~
 अनामिका र्जुं हृत्सपि नाहं यत् ॥ ३ ॥ ~~॥ दत्ति धा र्जुं हृत्सपि ॥~~
 ॥ ४ ॥ ~~॥ दत्ति धा र्जुं हृत्सपि ॥~~ अनामिका र्जुं हृत्सपि नाहं यत् ॥ ५ ॥ ~~॥ दत्ति धा र्जुं हृत्सपि ॥~~
 ॥ ६ ॥ ~~॥ दत्ति धा र्जुं हृत्सपि ॥~~ अनामिका र्जुं हृत्सपि नाहं यत् ॥ ७ ॥ ~~॥ दत्ति धा र्जुं हृत्सपि ॥~~

॥ ४४ ॥ **ॐ** नत्वप्रियस्वाहा ॥ ४ ॥ **अथ** ~~सर्व~~ ~~स्व~~ ~~स्वी~~ मूडारुवनि ॥ **अन्या** **न्या** **ग** **वि** **व** **क्षारु** **कु**
॥ ३३ ॥ नीदयप्रसार्यमुखस्वापयण ॥ ५ ॥ **अथ** ~~गि~~ ~~ना~~ ~~रु~~ ~~मा~~ ~~या~~ ~~मू~~ ~~डा~~ ~~रु~~ ~~व~~ ~~नि~~ ॥ **अन्या** **न्या** **ग** **वि** **व** **क्षारु** **कु**
 तिमननिर्गङ्गा **अ** **लि** **शि** **न** **सि** **ध** **न** **य** **ण** ॥ ६ ॥ **अथ** ~~न~~ ~~का~~ ~~या~~ ~~मू~~ ~~डा~~ ~~रु~~ ~~व~~ ~~नि~~ ॥ **अन्या** **न्या** **ग** **वि** **व** **क्षारु** **कु**
 हस्तैरवद्वानधदयस्वापयण ॥ ७ ॥ **अथ** ~~सर्व~~ ~~य~~ ~~अ~~ ~~ध~~ ~~नी~~ ~~सु~~ ~~न~~ ~~ह~~ ~~न्~~ ~~नी~~ ~~मू~~ ~~डा~~ ~~रु~~ ~~व~~ ~~नि~~ **॥ मन ॥**
 ॥ **अन्या** **न्या** **म** **सि** **ह** **क** **त्वा** **क** **नि** **ष्टा** **द** **य** **प्र** **सा** **न** **य** **ण** ॥ **क** **नि** **ष्टा** **कु** **धु** **लि** **क** **त्वा** ॥ ८ ॥ **अथ** **॥ ३३ ॥**

रु **गि** **नी** **मू** **डा** **रु** **व** **नि** ॥ **अन्या** **न्या** **म** **सि** **ह** **क** **त्वा** **क** **नि** **ष्टा** **द** **य** **प्र** **सा** **न** **य** **ण** ॥ **क** **नि** **ष्टा** **कु** **धु** **लि** **क** **त्वा** ॥ ९ ॥ **अथ** ~~सर्व~~ ~~रु~~ ~~ग~~ ~~नी~~ ~~रु~~ ~~ग~~ ~~ना~~ ~~ही~~ ~~मू~~ ~~डा~~ ~~रु~~ ~~व~~ ~~नि~~ ॥ **अन्या** **न्या** **म** **सि** **ह** **क** **त्वा** **क** **नि** **ष्टा** **कु** **धु** **लि** **क** **त्वा** ॥ १० ॥ **अथ** ~~गि~~ ~~रु~~ ~~ग~~ ~~ना~~ ~~म~~ ~~न~~ ~~ग~~ ~~लु~~ ~~ना~~ ~~अ~~ ~~म~~ ~~ह~~ ~~म~~ ~~धु~~ ~~ल~~ **॥**
मू **डा** **रु** **व** **नि** ॥ **अ** **थ** **ग** **ि** **रु** **ग** **ना** **म** **न** **ग** **लु** **ना** **अ** **म** **ह** **म** **धु** **ल** **॥** • ॥ **अथ** ~~ग~~ ~~ि~~ ~~रु~~ ~~ग~~ ~~ना~~ ~~म~~ ~~न~~ ~~ग~~ ~~लु~~ ~~ना~~ ~~अ~~ ~~म~~ ~~ह~~ ~~म~~ ~~धु~~ ~~ल~~ **॥**
रु **गि** **नी** **मू** **डा** **रु** **व** **नि** ॥ **अ** **थ** **ग** **ि** **रु** **ग** **ना** **म** **न** **ग** **लु** **ना** **अ** **म** **ह** **म** **धु** **ल** **॥**

॥ हग ॥ ओं यमाय स्वाहा ॥ याम्माय म ॥ ओं नाजसाधिप गयहन ॥ स्वाहा ॥ नेजसाधिप
 ॥ ३४ ॥ ग ॥ ओं वरुधाय नागधिप गयहन ॥ स्वाहा ॥ पस्विमवरुध ॥ ओं वायुय वसु ॥ स्वाहा ॥
 वायुय वायुर्देवगा ॥ ओं कुरवाय यजाधिप गय स्वाहा ॥ उरुनेव अवध ॥ ओं वरुधाय स्वा
 हा ॥ ६६ ॥ नचन्द्र ॥ ओं श्रीक्षानाय स्वाहा ॥ नृक्षान्यो श्रीक्षान ॥ श्रुथवाक्रमधुलमृडात ॥ मन ॥
 ऊधविधिविस्तारवर्गि ॥ दक्षिणहस्तमूर्ध्वैकत्वाधुगधनकन्यकायानरवमाक ॥ ३४ ॥

लघोगुलिविचलीकृत्वा ६६ द्रुममृडा ॥ १ ॥ वामहस्तमूर्ध्वैकत्वाकिशिश्वान
 यदग्निमृडा ॥ २ ॥ दक्षिणमूर्ध्वैकत्वागर्जनीप्रसानयनगयमस्यदधुमृडा ॥
 ३ ॥ दक्षिणहस्तमूर्ध्वैकत्वागर्जनीमध्यमाप्रसानयनजाजसाधिपस्यरवमृडा
 ॥ ४ ॥ वामहस्तमूर्ध्वैकत्वागर्जनीप्रसानयनग ॥ गर्जनीकृधुलीकृत्वावेरुधस्यना
 गमृडा ॥ ५ ॥ वामहस्तमूर्ध्वैकत्वासव्यार्जमूर्ध्वैकत्वागर्जनीप्रसानयनवायाशप

॥ रुग ॥ टाकमूडा ॥ ३ ॥ दक्षिणरुक्मसिद्धिं कृत्वा शृंगरुक्मकन्यसुखं ववमाकन्यसुखं वागु
 ॥ ३५ ॥ सिद्धमानयन् ॥ ४४ ॥ नस्य सिद्धिं नमूडा ॥ ॥ अथ प्रहृष्टमूडारुवनि ॥ संप्रहृष्टमूडारु
 सिद्धिं च प्रहृष्टमूडारुवनि ॥ ॐ सिद्धिं वज्रश्रापनयश्च ॥ प्रहृष्टमूडारुवनि ॥ ८ ॥
 अथ सिद्धिं कर्षणमूडा ॥ अथान्यमूडि कृत्वा कनिष्ठाद्वयवस्थेयगे ॥ गर्जनीप्रधान ॥ मन ॥
 अथ कृष्टसिद्धिं कृत्वा सिद्धिं कर्षणमूडारुवनि ॥ ॐ वज्रनाभिं महाक्रोधसिद्धिं कर्षण ॥ ३५ ॥

॥ १० ॥ ॥ यद्दं ज४ ॥ सिद्धिं कर्षणमूडा ॥ १० ॥ ॥ क्रोधसिद्धिं महानाजसिद्धिं समयक्षसंन
 ॥ सिद्धिं सर्वदेवगा ॥ ४४ ॥ ॐ सिद्धिं मन्त्ररुना ॥ अननवज्रमूडारुवनि ॥ अथान्यमूडि कृत्वा कनिष्ठाद्वयवस्थेयगे ॥
 ० ॥ ॥ अथ रुक्मसुखमूडारुवनि ॥ वामरुक्मसुखं कृत्वा शृंगरुक्मकन्यसुखं वागु
 दक्षिणरुक्मसुखं कृत्वा शृंगरुक्मकन्यसुखं वागु ॥ दक्षिणरुक्मसुखं कृत्वा शृंगरुक्मकन्यसुखं वागु
 कन्यवज्रधनेरुगासनमूडा ॥ ॐ अथ २ महाक्रोधसिद्धिं कर्षणमूडा ॥ ३५ ॥

॥ रुग ॥ दक्षयश्चत्रयश्चाहा ॥ रुगासनमन्त्रः ॥ ११ ॥ अथ सर्वदेवगाया आसन
 ॥ ३६ ॥ मृडारुवनि ॥ संप्रदीर्घलिङ्गामर्घां गुं लि समा ३३ लि ४ पद्म मृडा ॥ ओं पद्म रुग
 वनि यथीय सर्वदेवगानी स्वाहा ॥ सर्वदेवगा आसन पद्म मृडामन्त्रः ॥ १२ ॥ अ
 था वच पद्म मृडया धाव गुं हो वाच यत्सर्वदेवगा विसर्ज्जन मृडा ॥ ओं सन २ विस
 न २ गच्छ २ सर्वदेवगा श्रीवज्रधन ४ समाह्वय यगि स्वाहा ॥ विसर्ज्जन मन्त्रः ॥ सर्व
 ॥ मन ॥
 ॥ ३६ ॥

सिद्धि महाक्रोध मूर्ख सिद्धि दायकः ॥ दत्तावडी महासिद्धि गच्छ सिद्धि मन्त्र रुनी
 ॥ भूने नरका ३६ मृदया न ४४ निरुगताम न महागच्छ नोर्ग सिद्धि मेहान धुले
 स्प सर्वदेवगा यामृडा विधि विरुने गच्छ ४४ दुर्थ ४ कल्प ४ ॥ ॥ अथ खलु वज्रपा
 धि महाक्रोध धिपनि निद मृवाच ॥ अथ मधुलस्य दर्शन माय ४४ धे धा रुकनाथी
 प्राप्ताणि ॥ ॥ वज्रधन जाप माय ४४ वज्रधनो रुवनि ॥ अस्मिन् वातु दीपक च

॥ २८ ॥ रुवनि ॥ श्रीवक्रधनमहाक्रोधधियनिनामाश्चानिगमार्थधसर्वरुग-रुगको
 ॥ २९ ॥ रुवनि ॥ अथमन्त्रीधर्माकुञ्जमार्थधसर्वलोकिकदेवगाश्चभगवधुवीक्षीर्येन ॥ सर्वदे
 वनागयजादिदृष्टिनाकुञ्जधियनि ॥ सर्वलोकिकदेवयारुंकानमार्थधप्रपत्तयर्ग ॥ अ
 थश्रीवक्रधनमहाक्रोधधियनिमन्त्रेणैकपञ्चिप्रेक्षिद्विनि ॥ पूर्वस्ववारुवनि ॥ २९ ॥ मन ॥
 ननात्मनश्चाचरुवनि ॥ अथवक्रधनसाधयिदुकामामासमर्कप्रिर्धसहस्रजपक ॥ ३० ॥

ग ॥ प्रधुमास्मीविधिवत्पूजाकृत्वाक्रोधमूद्राश्चवर्द्धासकलनाद्रिजपन ॥ ग ॥ ४५
 र्ग ॥ रुकेम्पनमूद्राचक्षुर्लनिमार्थधबंधनसह ॥ रुवनि ॥ अजनामनदिव्यरुपा
 रुवनि ॥ १ ॥ अथउमादेवीसाधयिदुकाम ॥ उमादेर्विवामपादेनाकस्यायुर्ग
 जपेत्स्वयमवागच्छति ॥ सर्वद्रव्यचनेनसायनेददानिरायारुवनि ॥ यदिनसिद्ध
 निगदाविषयधियेधसपयग्वामपादेनाकम्पदेक्रोधमन्त्रमृच्चानयन ॥ ३१ ॥

॥ हन ॥ वक्षमानयश्चमूर्कं हं हं रुद्रः ॥ अनेन काधमर्त्यं धासुसहस्रजपत्नः ॥ आपिममाध
 ॥ ३८ ॥ भिनस्कृटिनिभुव्यनिमियर्गवा ॥ ४४ मं काधमर्त्यं सर्वमानः ॥ धयोजयत् ॥ २ ॥
 अथ श्रीदेवीसाधयिषु कामः ॥ श्रीदेवी वामपादेनाक्रम्या पूर्णजपत्नः ॥ श्रीदेव्या गच्छति
 आगमायाः ॥ कुरुमासुनेदद्यात् स्वागन् किंवकुर्वीममशय्यो रुवस्वति ॥ यथैष्टकाम
 यिनव्यानाश्च ददाति ॥ ० ॥ ~~॥ श्रीदेवी वामपादेनाक्रम्या पूर्णजपत्नः ॥ यथैष्टकाम~~

॥ मन ॥

॥ ३८ ॥

अथ धागनिकर्माधिकनामि ॥ ॥ ~~॥ चामुधु वामपादेनाक्रम्या पूर्णजपत्नः ॥ अथ~~
 मागच्छति ॥ चामुधु बद्धविधयारुवति ॥ अथ विधेः सर्वमारुकासाधयत् ॥ श्रीदेव्या
 नि ॥ ॥ ~~॥ श्रीदेवी वामपादेनाक्रम्या पूर्णजपत्नः ॥ अथ~~
 धमा विनिकर्मसाधनस्पमहापनमनोदामि ॥ अथ सर्वसाधनकर्माधिकारवति ॥ अथ
 लिर्जं गत्वा लिर्जं वामपादेनाक्रम्या सहस्रं जपदिवसानि सफ ॥ १ ॥ नमामहादेवाय

॥ हूँ ॥ कृमिजदिनागनिगच्छा देवसिद्धयम् ॥ ॥ नानायध्वामपादेनाक्रम्याष्टसह
 ॥ ३६ ॥ सुअपदिवसानिस्फ ॥ क्षीयुमागच्छा निगयदिनागकृमिनिस्फूटनिस्त्रियर्गवा ॥ अ
 स्मनानायध्वविध्यारुवनि ॥ किंकनारुवनि वनकोरुवनि ॥ २ ॥ ~~वज्रानवामपादे~~
 नाक्रम्याष्टसह सुअपदिवसानिस्फ ॥ क्षीयुमागच्छा निगयदिनागकृ
 मिस्त्रियर्गवा ॥ ३ ॥ ~~वज्रानवामपादे~~ नाक्रम्याष्टसह सुअपदिवसानिस्फ ॥ क्षीयु

॥ मन् ॥
 ॥ ३६ ॥

मागच्छा निगयध्वमर्क किंकनारुवनि ॥ उर्वक्षी देवकन्यसामानीयददनि ॥ यदिना
 गच्छा निगयध्वमर्क निगयध्वमर्क निगयध्वमर्क निगयध्वमर्क निगयध्वमर्क ॥ ४ ॥ ~~वज्रानवामपादे~~
 नाक्रम्याष्टसह सुअपदिवसानिस्फ ॥ क्षीयुमागच्छा निगयध्वमर्क निगयध्वमर्क निगयध्वमर्क
 निगयध्वमर्क निगयध्वमर्क निगयध्वमर्क निगयध्वमर्क निगयध्वमर्क ॥ ५ ॥ ~~गधप~~
 निगयध्वमर्क निगयध्वमर्क निगयध्वमर्क निगयध्वमर्क निगयध्वमर्क निगयध्वमर्क निगयध्वमर्क

॥ रुग् ॥ मिश्रियनः सर्वविनायका किंकनारुवनिः ॥ ॥ अश्विनामपादेनाक्रम्याष्टस
 ॥ ४० ॥ हर्षजपदिवसानीसफः श्रीधुमागच्छमिनाश्वददामिः ॥ ७ ॥ वदमावामपादे
 नाक्रम्याष्टसहर्षजपदीवसानीसफः श्रीधुमागच्छमिनाश्वददामिः अस्या
 चन्द्रावधविधयारुवनिः ॥ ८ ॥ ॥ नववामपादेनाक्रम्याष्टसहर्षजपदिवसानी
 सफः पुननाश्रीउदानीपूजाकृत्वा महामासेन धूपेदत्वा महामासेन नववर्षदत्वा ॥ मन ॥
 ॥ ४० ॥

महामासेन दीपप्रजालयन् गंगाशर्द्धनाग्रममय महानादप्रमृशति अष्टदहासना
 मिच्छतिः शलासाधकरु अयामि नववदमिः गंगानरुगव्यथदिकदा विद्रुयैरुवनिः
 ॥ १ ॥ कानदद्यात्स्वस्वारुवनिः ॥ २ ॥ नवावधविधयारुवनिः ॥ ३ ॥ धातुकनाश्वददामिः ॥ ४ ॥
 कानमाश्रयः सर्वलोकिकदेवतायासयनिः ॥ ५ ॥ ॥ नववामपादेनाक्रम्या
 ष्टसहर्षजपदिवसानीसफः गङ्गा देवागच्छमि किंकनारुवनिः ॥ १० ॥ ॥ मरु

॥ रुग् ॥ कार्त्तवामपादेनाकुम्भायुर्गैजपदिवसानीसफः सगधपनिवानधगकृगियदिना
 ॥ ४९ ॥ गकृगिगजधदवप्रियममहाकालधगकारुवगि ॥ ११ ॥ ~~वदुर्मुखीधनायन~~
 नैगत्तावामपादेकुम्भायुर्गैजपदिवसानीसफः सगधगकृगि ॥ यदिनागकृगिप्रिय
 म ॥ सपनिवानाकिंकनारुवगि ॥ पृष्ठमानाप्यस्वर्गमपिनयगि ॥ उर्वशीमानीयदद ॥ मन ॥
 निदिव्यनसनसायनंददागि ॥ ~~४९ ॥ रुग्वान्धुीवजधनमहाकाधधिपगि ॥ ४९ ॥~~

~~गिरुगजामनगजनागकिंकनगाधनविधिविद्वान्धुय ४९ ॥ १ ॥ अध्यागाड~~
 पनमिगवलपनाकुमस्यधेधकुकेनमरुगस्यसाधनेप्रचक्रौगिसयैकोधनराविर्ग ॥
 मवृष्यार्धाहिगार्थायरेगिसाधनमूळने ॥ शालेरुपमकानीधामृधावादिनामपिसि
 ध्यनि ॥ किंनून ४४ ॥ निवर्त्तनिप्रामिद्यवक्रचर्थेधसमस्किगानीनिर्येकाधजापिनी
 पनमन्त्रेधकर्षधैप्रयगरुगिनीनीनागिनीनीयजिधीनीयदीरुत्तिधिनुरुमा ॥ सा

॥ हृग ॥

॥ ४२ ॥

धकानां हि गार्थाय उपस्थापिका उच्यते ॥ प्रथमे साधने कृत्वा द्वितीये सिद्धिं मूर्तमां
विद्याधनासूत्रसूत्रमिहा महाविधानं विनामधिरुद्रघटादियजिहीसाधने वा पिशाचीषा
लक्ष्मिः काष्ठं श्यवमादय ४ सिद्धा ॥ किंपूनः ४ गन्ध ४ मि उक्तवान्नुध ४ ॥ रुग्णिनी च द
वरीना नागकिन्नरमवच ॥ सिद्धं गन्ध ४ दव ४ गन्ध ४ नाधिव ॥ ~~कनका~~ मनम
हा गन्धु नागसर्वस्व ४ दवसिद्धिनिधीयय ४ रुग्णिनाधक ४ आचार्यनिन्दका

॥ मन ॥

॥ ४२ ॥

४ सर्वस्वदवगामपि निन्दका ४ मन्त्रजापिसदा कुर्व ४ सर्वधर्मप्रणिश्रुप ४ सर्वग्रसम
यत्तुं सिर्नास्ति मन्त्रविवर्जित ४ अथमात्र ४ सिद्धं गन्धयै क्राधनराधिग ४ ४
~~हृगवान्~~ श्रीवक्राधनमहाक्राधधिपगि ॥ ॥ ~~अथानापना~~ अधिपिनहस्यागिने
हृग्वान्मनमन्त्रनागसाधनानिरुवन्ति ॥ प्रथमे गावस्य णिगमा ४ ४ सिद्धिनि
सर्ववदवरीकिकनी ॥ ~~श्रीवक्राधनमहा~~ क्रोधाधिपगिमन्त्रापमात्र ४ भीष्टुं सिद्ध

॥ हृम ॥ मि ॥ ~~अथ मन्त्रः~~ सिद्धिं शुभाय विष्णुविना हने ॐ श्रीं हं क ह २ अमृकं ज ४ ॥ हने
 ॥ ४३ ॥ न को धस हि न न ज प ह व अ ह ह न ज प म अ ध धी घु मा ग क नि स र व र दी का रु वे नि
 यदि ना ग क नि धी घु अ जि नृ द्वि रू दं मि स क ल ल अ वि न व ॥ ॥ ~~गो व न न ह~~
 मि नी प्र मि मा मा लि ख वा म पा द ना म्पा ह स ह भुं ज प रू क षा द वा हा हा का न ह न ना ग रु ॥ मन ॥
 मि स्त ना मि २ हा हा सा ध क कि ना ह्य प य मि सा ध क न व क वी हा रु मि नी अ स्मा कं व दि ॥ ४३ ॥

रु व स्प मि ॥ अ न व र्षा शि र टि क र्मा धि क ना मि ॥ ॥ ~~रु ज प रू ना ना व न न ह~~ मि नी प्र
 मि मा लि ख वा म पा द क म्पा ह स ह भुं ज प रू क षा द वा ग रु मि वि हा व ना न ग त्वा ह स ह
 भुं ज प रू ॥ ना जी कृं ज म मि र्ना म रु मि न्पा ग रु मि ॥ अ ग ना या व लिं द प य न ॥ क म कि म या
 क रू वी सा ध क न मा ना भ रु व र्षा मि ॥ मा रु व स्य मि पा ल य मि ॥ अ त्म ना व प र म स्य व
 म्ना ली का नं रु ज ना नि प्र य कं मि ॥ ~~रु मि रू ग ज न व न ल ना रं व दि सा ध न वि धि वि स्त न~~

॥ ४५ ॥

॥ ४५ ॥

मपानककुलहाविहीदनिनीनीयनमागकुमिः आगगायामुधिनः ॥ घादि य ४ तु क्षारुवमि
साधकनवकव्यंमागारुवस्वमिः पुत्रवत्पनिपालयगुवाप ३ ॥ नदीनानात्पनिदिनेद
दागिः २ ॥ अथसिंहनासाधनैरुवमिनाथो वकलिर्जंगत्वा अयुर्गजपत्स्वयंभवाग
कुमिरासाधककिंकनीमिगिः साधकनवकव्यंराय्योरुवस्वमिः नसनसायनेदिव्यं
वददागिः अक्षदीनानाधिवन्तुयुगलेददागिः ३ ॥ अथगसिनीसाधनैरुवमिः

॥ मन ॥

॥ ४५ ॥

वज्रपाथिसहैगत्वादिव्यविमानमस्यशुभदिवसाधनैरुवमिः वज्रपाथिसन्निधौलिखित
कनवीनपूष्यप्रकनर्धादत्वा उपरुवावशाचदद्नार्जस्वयंभववज्रधनगृहंभीष्टमागकु
मिः आगगायामुन्दनादकेनाघादिय ४ तु क्षारुवमिः ॥ साधककिंमाह्लापयसिः सा
धकनवकव्यं अस्माकं किंकनीरुवस्वमिः निश्यान्वुद्धारुवमिः ॥ कम्बालंकोनराजनानि
प्रयकुमिः गानिनिनवत्सर्षव्ययिकर्कव्यानिः ॥ यदिकिश्चिच्छ्वपयमिः नथनरुवमिः

॥ रुम ॥ ॥ ४ ॥ नदिर्गमगत्वा अरुत्तं रुत्तं जपदिवसानि सफः ॥ सफमदिवस उदानां प्रजां क
 ॥ ४६ ॥ ता आदिष्यात्तै गम चन्दन न धूपै दत्वा गावशा वक्रपदं जना यं भी घुमा गच्छति ॥ आगमा
 या काम रुग्मा रुग्मा हिवगि ॥ दिव्य सवर्धु पत्न्यै वयं न पनित्य प्रणमना गच्छति
 ॥ एवं दिन दिन निरूपस्था रुवगि निनव ॥ अथ वयं कर्तव्यं ॥ यदि किञ्चित् स्नापयति रु
 यान रुवगि ॥ ५ ॥ अथ महा वटि सा धन विधि विस्तरे प्रवक्ष्यामि नाना सिद्धि सा ॥ मन ॥ ४६ ॥

धनं नामा चान दामार्थं ॥ कुर्वन्ति ज्यनिष्ठा धनमिति भावना प्राप्ता न हामान पूर्व सवा प्रजा
 पतं सिद्धिं गत्वा ॥ दैववज्रपादिवचा यथा ॥ ३ ॥ अथ वगिसा धनं रुवगि भावा
 खरु हानं गत्वा जपदिवस्म निविं भिनीय गमा गच्छति ॥ वटिकर्मा धिकवा गि ॥ स
 र्वं कृषिकर्मा धिष्टु हसत्का नादी निव ॥ वमादि नीच कर्मा धिकवा टि ॥ ४ ॥ अ
 थ काम धर्मा सा धनं रुवगि भावा हान दामा रुका स्नानं गत्वा भावा मत्स्य मान

॥ ८८ ॥

॥ ८९ ॥

विधिनायावदयः स ह्युवाचान्दिवसानि सफनियतमागच्छति ॥ आगतायापयः ४ नृधिवधार्थं
दयः ४ स्तामिनकिमाहपयसि ॥ साधकं नवकव्यमस्माकं कार्यारुवस्वति ॥ सर्वसापनिपुत्रयति
नाशददाति ॥ ८७ ॥ ~~अथ श्रीसाधनैरुवतिनाडीद्वयगृहधर्माकल्पयकृतिरुचन्दननसि~~
~~पुष्पधार्चयत ॥ गुरुं नृधुपदत्ताज्यसहस्रं ऊपत ॥ ऊपान्ननियतमागच्छति ॥ अलिंगधनुस्व~~
~~नेयथ ॥ कंकामयि नर्थ ॥ दिव्यकनकवर्णकुमालिसेवात्वंकाचरुषितोम्यजतिरुवति ॥ अथ~~

॥ मन् ॥

॥ ८९ ॥

शिनानेवमुगलंचसपनिवाचस्यकामिकराजनैददाति ॥ अथवेधमक्षगृहद्वयमानी
ददाति ॥ न हस्यतानि जयतु ऊपान्नसिद्धानि ॥ अथविश्याहृगवान् ॥ ~~अथमन्त्रक~~
~~नाज ॥ अथविनीतावनविधिविनाचनं ऊपत ॥~~ ॥ अथमन्त्रकथनं ४ पनाक्रमस्य
द्विनिकमसाधनस्य सर्वदेवमाचधमन्त्रपदराधनम् ॥ ओं हन २ सर्वमाचयवर्कजालय
हं हृद ॥ अथस्मिन्नापि न मातृशब्रम्भाविद्युर्महं ॥ अथनादिसर्वलोकिकदेवका ४ अनक

॥ रुद्र ॥

॥ ४७ ॥

विया धनय कनाग प्रकपि ॥ च गन्धर्व किन्नर म हा न ग ग वृ ऊ दि सर्व र व ना ४ ख ७ ख ८
मा नी रु र १ ४ अ म ऊ ३ श्री कृ मा न रु गो वा धि स त्वा म हा स त्व ४ म वि स्त य ५ व मा रु १ सा धू २ श्री
व क ध न म हा को धा धि प कि ४ प र्वि म काल प र्वि म स म य स व दू स र व ना दी नी नि गू र्म मि नि
पू धा स न सा स्का या स्मि न्य र्ष द म छु ले श्री व क ध न म्ये पा दो शि न सा व न्दि त्वा स्त ह र य म द
इ १ ॥ ३ ॥ श्री १ ४ सि द्ध्या १ ॥ ३ ॥ श्री १ ४ तिला कृ मा १ ॥ ३ ॥ श्री १ ४ का र्क न मा ला १ ॥ ३ ॥ श्री १ ४ की १ ४ क ७

॥ म न ॥

॥ ४७ ॥

ल मा नि धी १ ॥ ३ ॥ र्क न त्वा ला १ ॥ ३ ॥ म र व ला १ ॥ ३ ॥ उ र्व श्री १ ॥ ३ ॥ श्री रु वि धी १ ॥ ३ ॥ अ थ स व स
सि द्धि सा ध ना ध न वि धि वि स्त वा रु व मि १ ॥ प र्व न शि व न मा वृ ष्ट ल र्क ५ प र्क १ घु मा ग कृ मि
१ ॥ आ ग ना या ध न्द ना द क ना र्धा द य १ ॥ वा ला नि रु १ ॥ च य मि १ ॥ १ ॥ अ थ तिला कृ मा सा
ध न र्क व मि १ ॥ च न्द न का स म यु र्क ५ प र्क दि व सा नि स फ स फ म दि व स उ दा र्गो पु र्जो कृ त्वा थ
का र्क म्या प र्व न म र्दि स क ल वा र्धि ५ प र्क १ रु नि य न मा ग कृ मि पू व न मि र्क मि १ ॥ अ लि

二 五

॥२२॥

ॐ शिवस्वयं रुद्रं शिवं न कामयितव्या ॥ न वेति दातुं वक्ति ॥ यमिच्छति न ददाति ॥ पृष्टमात्रा पश्यन्
मपि नयति पुनरपि वाञ्छुं ददाति ॥ २ ॥ अथ काकेन मालाया साधने न वक्ति ॥ न हीमं गमं ग
त्वा ॥ सप्त रुद्रं जपेद्विंशति सप्त ॥ सप्तमं दिवस उदाची पूजा कृत्वा गुरुं च धूपं दत्त्वा सकल पापिं जपे
॥ कुरु प्रलोकं निगम मागच्छति स हावरासं कृत्वा ॥ कुरु ध्वननादकना धीं दियस्तु ददातु वक्ति ॥ वत्स
किमया कर्तुं यमिच्छति ॥ साधकं न वक्तव्यं माना मरुत स्वमि ॥ मातुः पत्युः पालयति रुक्ता लीका न

वस्त्रादीनि सपवित्राचस्य र्ददाति वर्षसहस्रं जीवति ॥ ३ ॥ अथ कुक्षुलमाविंहीमाधनैरुवति ॥ स
 किथिना पवासाविधीयते ॥ पर्वकर्मणि गत्वा अग्रं ऊपकृ ॥ मासमकं पुनर्द्वैपदत्वा प्रऊपवाधो ॥ कर्मा
 र्द्धवाधुनियकमागच्छति लाघ्यारुवति ॥ दीनावलर्द्धदाति ॥ पृथुमाशेषचक्रुदीपप्रनयति ॥ यत्
 नसानमिद्विद्वद्दाति ॥ ४ ॥ अथ यत्नमात्मासाधनैरुवति ॥ इवायमने गत्वा ह्यसहस्रं ऊपकृ
 मासमकं ॥ कर्मासाकवपुर्द्धसास्यी ऊपद्वैवाधो ॥ कर्मा र्द्धवाधुनपुनरान्दननियकमागच्छति

॥ ५५ ॥

॥ ५६ ॥

॥ आगतायाऽप्यासनं दद्यात्स्वागतं दद्यात् ॥ इति वक्तव्यं स्वाभिनि किमाह पयः ॥ साधकं न वक्तव्यं
मम कार्या रुवस्विति कार्या कर्मो कर्त्ता निदिव्य काम प्रियारु वक्ति वर्ष स हर्ष जीवति ॥ ५५ ॥
~~यत्नमाधनेरुवति~~ ॥ प्रतिपदमाचक्षुः पूजां कृत्वा चन्दनं नमस्तुलकं कृत्वा गन्धपुष्पं दत्त्वा
५५ स हर्षं पक्तिर्मर्ध्वं ॥ ५६ ॥ पूजां कृत्वा जपेत्प्रणामं नियतमागच्छति
यदि नागच्छति प्रियं कार्या रुवक्ति नमः सायनं ददाति ॥ यत्थं कृत्वा कामयितव्याः ॥ दक्षवर्ष ॥

॥ ५५ ॥

॥ ५६ ॥

समाधि जीवति ॥ यदा मृत्युं नाजकुलं जायते ॥ ५७ ॥ ~~यत्नमाधनेरुवति~~ ॥ नाशोद
गृहं गत्वा चन्दनं नमस्तुलकं कृत्वा गन्धपुष्पं दत्त्वा ॥ मासान् यथा विरुवन् ५७ पूजां कृत्वा सकलार्थं
पुण्यं प्रणम्य ॥ ५८ ॥ पुण्यं मागच्छति आगताया कृत्वा मम न दद्यात् ॥ स्वागतं निदिव्य कर्त्तव्यं ॥ साधक
किं रूपयसि ॥ साधकं न वक्तव्यं मम कार्या रुवस्विति ॥ नमः सायनं सिद्धि इव च ददाति ॥ प
वक्तुं यत्किं गमयिष्येत्पुण्यं च वर्ष स हर्ष जीवति ॥ ५९ ॥ ~~यत्नमाधनेरुवति~~ ॥

॥ ५१ ॥

॥ ५२ ॥

साधनेदिनं श्री घुसखवदयकमातावापिरुगिन्यावालायावापिसं रूप ॥ ५१ ॥
वटी ॥ ५२ ॥ हृदिनी वट्ट हलाके सप्रदा ॥ जो धजापी हितार्थ यस्वयं धनी वट्टवान् ॥ ५३ ॥
न्यायमहिमं युक्तं उरी हसी कमला वट्ट या एता मध्यम्य झुलि शुचि कला अष्टासन
समावाप्त सर्वदृष्टि खना धनी मूडा ॥ उरी हसी रवट का काना ॥ सवोप नवधं कनी ॥ सान्नि
ध्यादि मूडा सर्वकाम प्रसाधनी ॥ उरी हसी कमला वट्ट या एता सर्वोप नवधं मा हनी ॥ मूडा

॥ म न ॥

॥ ५२ ॥

वव न्धममाठ ददासिरुवमिक्तु धा ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
मनु ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
कवदमनु ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥

॥ ह्र ॥ नदी स्वाहा ॥ सुन सुनदी ॥ १ ॥ ~~अं सर्वमाहाविधी स्वाहा ॥ मता रुची ॥~~ २ ॥ ~~अं कनकमणी~~
॥ ७३ ॥ मेधन प्रिय स्वाहा ॥ कनकमणी ॥ ३ ॥ ~~अं गगनकामि ४ ॥~~ स्वाहा ॥ कामे ५ ॥ स्वाहा ॥
 कामे ६ ॥ स्वाहा ॥ ४ ॥ ~~अं नमिप्रिय स्वाहा ॥~~ ५ ॥ ~~अं पद्मनी स्वाहा ॥~~ पद्मनी ॥ ६ ॥ ~~अं न~~
 दीमहानदीमवपनी स्वाहा ॥ ७ ॥ ~~अं नृनागिनी मेधन प्रिय स्वाहा ॥~~ नृनागिनी ॥ ८ ॥ **॥ म न ॥**
~~अं यद्विधी साधने विधिविरुवा रुवकि ॥~~ वरुपाधिगृहं गत्वा गृह्णीतु धूपदत्तादिर्मधुस **॥ ७३ ॥**

हर्ष उपरु ॥ मासाय नृनिष्कमाग रुकि ॥ आगमायाश्च नृनादकं नार्थादयश्माकारुगीनीला
 र्थावाकर्मोक्षिक वाकि ॥ यदि माकारु वकि विरुमर्दयि कर्ष ॥ नमवसायने प्रकिदिने दीनाचलकं
 र्थे वाददाकि ॥ यदि रुगिनी रुवकि दिवस्मृ कामे प्रदा रुवकि वसवसायन सिद्धिद्वय च ददाकि ॥
 दिव देवकन्यामानीय ददाकि ॥ अनीकानागरु वरुमाने कथयकि ॥ यदि रुग्या रुवकि ॥ सर्वसम
 किं पूवयकि महा धनपकि रुवकि ॥ १ ॥ ~~अथ मनाहाविधी धने रुवकि ॥~~ नदी टर्नत्वा च नृने

॥ रुद्र ॥

॥ ॐ ॥

नमधुलकैकृत्यामरुनीपुजाकृत्वा ५ हस्तस्यैकपदं ॥ गगर्गं नृधूपधूपयन् ॥ अग्नौ नृपदिव
सानिसफसफमदिवसउदावापुजाकृत्वा सकलनाथिं नृपदं ॥ ६ नृनियतमागच्छति ॥ य
दिनागच्छतिप्रियं ॥ आहूयदीक्षितवदति ॥ साधकनवकृत्वा मस्माकं वरिरुवस्वति ॥ अष्टाग
वावाभ्यालयति ॥ दीनावधर्मप्रतिदिनैददाति ॥ निववत्सव्ययीकर्तुं वा ॥ यदि किंचिच्छापयति ॥
रुद्रानरुवति ॥ २ ॥ अथतानकमहिसाधनैरुवति ॥ वटवृक्षगत्वा मत्समान् विधिनासवा

॥ मन्त्र ॥

॥ ॐ ॥

सपयन् ॥ आहूयरावयित्वा उक्त्वा नार्घ्यं दय ४ स हस्तमर्कं नृपदं ॥ नृवेसफमदिवसवापु
साधयन् ॥ यावद्वृक्षं वा नृसर्व्वर्त्तिकावदिरुषिनाष्टागपविवाप्तयमवागच्छति ॥ आगच्छका
मयि नृवा राय्या रुवति ॥ द्वादशजनावकुलं कानकामिकलाजनेवददाति ॥ प्रतिदिनै
अष्टोदिनावाप्तयच्छति ॥ ३ ॥ अथकामध्वनीसाधनैरुवति ॥ रुद्रपदं ॥ वासन
प्रति कृतिमालिख्य नृकाकिनीयापनमा नृ इन्द्रानमस्तु नृपदं ॥ मासान्कउदावापुजा

॥ ५५ ॥

॥ ५५ ॥

कृत्वा घृण्य दीपान् जाल्पमो नो हृत्वा जपेत् ॥ कृत्वा इदं वा ५ नियममागच्छति ॥ आगच्छ कामप्र
दरुवति ॥ दिव्यालंकारं ध्यायेत् पादयुग्मं प्रणम्य प्रगच्छति ॥ पत्रक्रियादिगमदीवर्जयेत् ॥
अथ विनोदयति ॥ ४ ॥ अथ विनोदयति ॥ विनोदयति ॥ विनोदयति ॥ विनोदयति ॥ विनोदयति ॥
लंकारं ध्यायेत् उत्पलहस्तां कुमारीं च जपेत् ॥ गुग्गुलुं च धूपं दत्त्वा इदं वा ५ इदं वा ५ इदं वा ५
सहस्रं जपेत् ॥ मासं मर्कटं मासान् कथयति ॥ विनोदयति ॥ प्रज्वाल्य दीपं प्रज्वाल्य दीपं प्रज्वाल्य दीपं

॥ मव ॥

॥ ५५ ॥

वदं वा ५ स्वर्गं भवागच्छति ॥ आगच्छ रुष्टीं रावदा कामयितव्या ॥ नर्वरायां रुवति ॥ साधक
स्य पवित्रं न निप्रतिपालयति दिव्यकामिकं रुज्जना नीचददाति ॥ अथ रुष्टीनां वा न्ययच्छ
ति ॥ ५ ॥ अथ पद्मिनी साधनं रुवति ॥ स्वर्गहस्तिवस्त्रान् चन्दनं नमस्तुलकं कृत्वा गुग्गु
लुं च धूपं दत्त्वा सहस्रं जपेत् ॥ मासं मर्कटं मासान् कथयति ॥ विनोदयति ॥ प्रज्वाल्य दीपं प्रज्वाल्य दीपं प्रज्वाल्य दीपं
वदं वा ५ नियममागच्छति ॥ आगच्छ कामयितव्या रुष्टीं रुवति ॥ विनोदयति ॥ विनोदयति ॥ विनोदयति ॥ विनोदयति ॥

11. 11. 11

सायनसिद्धिद्वयचरदाणि ॥ ७ ॥ अथनटिसाधनैरुचिः ॥ शुभकवृक्षाध्यासः ॥ नैजापथः ॥

॥ अह ॥

मान्साहवधपुष्पधूपगन्धदत्तासहस्रजपकृ॥ मान्साहवधनियममागंकृति॥ अग्निसामाना
गिनीकार्यादिसौमं रूपक४ यदि कार्यारुवति दिव्यवचसवसायने ददाति॥ अश्वेदीनावाप्त्यक
ति॥ यदि सामाना रुवति कामिकरुजनवस्तुयुगलं ददाति॥ यदि रुगिनी रुवति॥ याजनसहस्रास्ति॥ म३॥
यमानोय ददाति॥ वस्तुत्वं काव कामिकरुजनवस्तुवसायने ददाति॥ १॥ अथानुवागिनी॥ ॥ ५६॥

साधनेरुवति॥ कूर्कमनरुर्कपञ्चयक्तिशीमालिख्यरुक्४ प्रकिपदमानस्यपुष्पधूपविधिनाजिसं
ध्वंजपत्मासमर्क॥ रुक्४ पोर्दमासायायथाविरुवक४ पूजां कृत्वा घृणप्रदिपप्रजाल्यसकलनाडि
जप४॥ प्ररुक्नियरुमागुरुकि॥ आगन्त्यकामप्रदारायाविरुवति॥ दिव्यदिनाचमहृत्प्रयत्न
किचमचसायनेवददकि॥ वर्षसहस्राधिजीवकि॥ ७ ॥ ~~रुक्मिहृन्जमनरुक्कुंययकृषीसाध~~
~~नविधिविरुक्नकु४॥~~ ॥ ~~सुथस्वत्तुवजपादिगुप्सुकाधिपकिविदमूवाच॥~~ यदि समथनकिहृ

॥ ५५ ॥ ति॥ अनेन का धमहि न न ज प र ॥ शं धै क ह २ अ म क य क्रि दी ही शं ज २ ज २ हं रु द ॥ अनेन का धमहि न
॥ ५६ ॥ न स ह र्ज प र छी घु मा ग रु ति ॥ यदि ना ग रु ति अ क्रि मूर्ति स्फु र ति न रु द ॥ सि य न ॥ अ स्म
 हान व र प ति कि ॥ ॥ अ ध की ध बा ज मू डाल रु दी रु वे ति ॥ अ न्या न्य मूर्ति रु त्वा क नि रु
 द य व रु य न ॥ रु र्ज नी द य प्र सा र्य कू र्ज य रु र्ज नी प्र ति रु ना की धा रु द मू डाल ॥ अनेन मू डाल
 बा ड न रु लो क मा क र्ष य ति ॥ १ ॥ अ ध य क्रि दी मू डाल रु दी रु वे ति ॥ स म क च रु या नि

॥ म न ॥
॥ ५६ ॥

रु त्वा म ध्य मा ग ल्पा पू न च वि प लि नै ॥ अ ना मि का रु र्ज नी बा श त्व व रु द ॥ रु र्ज नी अ
 सि नि व रु क नि रु ग के स रु ति ना ॥ स र्व य क्रि दी नी प च मू डाल ॥ अ न या व रु मा ड या स र्व य रु
 दी मा ग रु ति ॥ अ न्या न्य मू ड या द क्रि दी गू र्ज ना बा ड नै ॥ शं की शं अ ग रु २ य की दि ती
 घे पु न ना ग प द ॥ य स्वा हा ॥ २ ॥ अ न्या न्य मूर्ति रु त्वा म ध्य मा ग ल्पा प्र सा च य रु ॥
 स र्व य क्रि दी नी अ क्रि मूर्ती क व ध मू डाल ॥ डी म हा य क्रि दी नी मी थू न प्रि य स्वा हा ॥ ३ ॥ अ न्या

॥ रुक् ॥

॥ ॐ ॥

कुरुवति ॥ सनागिन्यस्तु कुरुवति सर्वनागिन्या हर्षयति ॥ शुक्रपके म्यानागरुवनं जलगर्भं
चावती ॥ यगिन्ध्रपुष्पधूपकीचय ॥ अर्कपूजयन् ॥ कुरुक्षेत्रे नागिनी प्रह्लादकंसहस्रं उपद्रु-
क्ती ॥ घृणागकन्यापाठावीचदस्रमाना आगताया ॥ क्रीचचन्दननाद्या ॥ दयश्चस्वागकठुति ॥
यमस्माकं लार्या कुरुवति ॥ अश्वेदीना वात्ययकृति ॥ अमृकमाचयति ॥ अमृकजीवयति ॥
॥ १ ॥ नदीसंगमं गत्वा क्रीचा हारं धास्यत्तु हस्रं उपदिशनागिन्या गच्छति ॥ आगमाया

॥ मन्त्र ॥

॥ ॐ ॥

४ कृत्वा मार्गने दापय कृत्वा मम कार्या रुवस्वति ॥ दिव्य कामि करु जन दायन प्रयच्छति ॥ पंच
दीनार्थं प्रतिदिनं ददाति ॥ २ ॥ ~~नागस्त्राने वा शो गत्वा~~ ५ हस्त रुद्रैः पद्म उपायं मह
ताक्षि च वा ॥ गदा गृहीता गच्छति ॥ वत्स मय किं कर्तव्यं ॥ सा धर्कन कर्त्तव्यं सा धर्कन वक्तव्यं
माता भक्तवस्वति ॥ आत्मना च पंचमस्य वत्सु लोका वरा उना दीनि दिन दिन ददाति ॥ पंच द
ना चास्य यच्छति ॥ स र्धं निच व ॥ क्षयं यी कर्त्तव्यं ॥ यदि किं नित्यं पयति न रुया रुवति ॥ ३

॥रुद्र॥

॥६०॥

॥ वायोऽथ गत्वाऽष्टमं हस्तं उपरुक्ती घृणागिन्याग कृतिः ॥ आगच्छ कामनव्याख्याया
रुवतिः ॥ अथोदीना वा न्यय कृतिः सर्ववत् ॥ अथोदीना वा न्यय कृतिः सर्ववत् ॥ अथोदीना वा न्यय कृतिः सर्ववत् ॥
वतिः ॥ ४ ॥ वायोऽथ गत्वाऽष्टमं हस्तं उपरुक्ती घृणागिन्याग कृतिः ॥ आगच्छ कामनव्याख्याया
गतायाऽष्टमं हस्तं उपरुक्ती घृणागिन्याग कृतिः ॥ आगच्छ कामनव्याख्याया
॥ अथोदीना वा न्यय कृतिः सर्ववत् ॥ अथोदीना वा न्यय कृतिः सर्ववत् ॥ अथोदीना वा न्यय कृतिः सर्ववत् ॥ ॥ मच ॥
॥ ६० ॥

कृतिः ॥ मम राया रुवतिः गिनी रुवतिः ॥ दीना वन्मर्क वन्तु पुर्गलं ददाति ॥ ५ ॥
नागरु वने गत्वा नाभि मा अमृद कमवती र्याष्टमं हस्तं उपरुक्ती घृणागिन्याग कृतिः ॥ आगच्छ कामनव्याख्याया
किष्णागतायाऽष्टमं हस्तं उपरुक्ती घृणागिन्याग कृतिः ॥ आगच्छ कामनव्याख्याया
वमा रुजनं ददाति ॥ ६ ॥ वायोऽथ गत्वाऽष्टमं हस्तं उपरुक्ती घृणागिन्याग कृतिः ॥ आगच्छ कामनव्याख्याया
मसवी लंका वरुषि नाग कन्या गच्छ ॥ दवाग कृतिः ॥ आगच्छ कामनव्याख्याया

॥ ६८ ॥

॥ ६९ ॥

यश्चागमनिवकृष्यममकार्यारुवत्ति ॥ दिव्यचमचसायेनैददाति ॥ तिदिद्व्याधिवप्रयतिमर्वा
 तापविपुत्रयनिवाशैददाति ॥ २७ ॥ नागरुवनेगत्वा ॥ यमैजपेत् श्रीघुनागकन्या आगच्छति ॥
 गमाया ४० श्रीघुनामयीत्याकार्यारुवति ॥ दिनदिशुद्धीदीनैददाति ॥ दिव्यकामराजनेददाति ॥
 २ ॥ नागनागकन्यायासानिर्ध्वंगत्वा ॥ सहस्रमुजपेत् ॥ ऊपाकेनागकन्या आगच्छति ॥
 दिव्यकमालैकावराजनादीन्ददाति ॥ २८ ॥ अथ नागिनीसमयमन्त्रादिरुवेति ॥ ओं ह्रीं ॥ आगच्छ ॥

॥ मन्त्र ॥

॥ ६९ ॥

नागिनीरुद्र ॥ आवाहनमन्त्र ॥ ओं ह्रीं रुद्रगन्धपूषामनु ॥ ओं ह्रीं रुद्रगन्धपूषामनु ॥
 रुद्र ॥ सर्वनागिनीसमयमन्त्र ॥ रुद्रगच्छ ॥ २० श्रीपूनागमक्षयस्वाहाविसर्जनमन्त्र ॥
 अथ मन्त्रादिरुवेति ॥ इन्द्रावमर्जे ॥ लिङ्गत्वाडत्वाया ॥ ह्रीं ल्यक्षिखवाकावद्ययाजयत् ॥
 रुद्रनीनरवर्गगाद्यावैगुह्यान्मृगानीगिनीसमयमन्त्रासर्वकृत्सर्वकर्तिकाभावाश्चसमयविसर्जन
 मन्त्रा ॥ वामदक्षिणमूर्ध्नि कृत्वा पृथक् पृथक् निक्षानरवर्गं देवाकम् ॥ अथ मन्त्रलिपिमात्रयत्नागिनी

॥ ५१ ॥

समय मूडासर्वनागवर्णकनी ॥ ५१ ॥ किरुगडामवकनुवाजनागिनीसाधनविधिविस्तृतकनु ॥

॥ ५२ ॥

अथवकनाधिगुष्टकाधिपतिजा ॥ ५२ ॥ अथवकनाधिगुष्टकाधिपतिजा ॥ ५२ ॥ अथवकनाधिगुष्टकाधिपतिजा ॥ ५२ ॥

मिनीमाकर्षयहे ॥ ५३ ॥ अथमिनीमाकर्षयहे ॥ ५३ ॥ अथमिनीमाकर्षयहे ॥ ५३ ॥

मययादिकमदामा ॥ ५४ ॥ अथमययादिकमदामा ॥ ५४ ॥ अथमययादिकमदामा ॥ ५४ ॥

अथमययादिकमदामा ॥ ५५ ॥ अथमययादिकमदामा ॥ ५५ ॥ अथमययादिकमदामा ॥ ५५ ॥

॥ मय ॥
॥ ५२ ॥

उत्थाय रुगवक ॥ ५६ ॥ अथउत्थाय रुगवक ॥ ५६ ॥ अथउत्थाय रुगवक ॥ ५६ ॥

लागवाहा ॥ ५७ ॥ अथलागवाहा ॥ ५७ ॥ अथलागवाहा ॥ ५७ ॥

स्वाहा ॥ ५८ ॥ अथस्वाहा ॥ ५८ ॥ अथस्वाहा ॥ ५८ ॥

पद्वित्री ॥ ५९ ॥ अथपद्वित्री ॥ ५९ ॥ अथपद्वित्री ॥ ५९ ॥

उत्तरी ॥ ६० ॥ अथउत्तरी ॥ ६० ॥ अथउत्तरी ॥ ६० ॥

॥ २५ ॥

॥ ५३ ॥

इह स्मार्कं लया रवस्विति ॥ पृष्ठमावाप्य देवला कमपिनयति ॥ दिव्यकामिकं शऊर्नचददाति ॥

॥ अथ ~~अथ~~ धनं रुवति ॥ पर्वमूलं विहाय वागत्वा ॥ युक्तं उपरूपान् स्वयं देवी कामलह
स्तनमादप्रचलगति ॥ श्रीधुं कविमया ला र्या र्वति ॥ अष्टो दीना नान्वस्तु युगलं ददाति ॥

॥ नदी कुलं गत्वा ॥ युक्तं उपरूप ॥ पुनश्च सकल चार्थं उपेत्य रागं नियममागच्छति ॥ आगता
या ला र्या र्वति ॥ दिनं दिनं पर्वो दीना चन्ददाति ॥ ॥ नदी नदी संगमं गत्वा ॥ इदं सहस्रं

॥ मन ॥

॥ ५३ ॥

ऊर्ध्वं ॥ ३ ॥

ऊर्ध्वं रूपान्क नियममागच्छति ॥ आत्मानं दर्शयति ॥ द्वितीयदीवसं पूजयति ॥ वार्चनं पठति ॥
तृतीयदीवसं कामयित्वा ला र्या कर्मकांति ॥ अष्टो दीना नान्वस्तु युगलं ददाति ॥ ॥ अष्टममु
ष्टिं गत्वा प्रतिदीनं मान्सादाय ॥ युक्तं ॥ श्रीधुं मन्त्रान् कामान्ति ॥ अलिप्तं च भुवनं रक्षति ॥ राव
नकामयित्वा ला र्या र्वति ॥ अष्टो दीना नान्वस्तु युक्तं दिव्यकामं शऊर्नचददाति ॥ ॥ अष्टमि श्रीरु
जमन्त्रं कुनारं पठति ॥ नदी साधनं विधिविधं नरक ॥ ॥ अथ स्वस्त्युपाधि गृह्यकाधिपति नरक

॥ ६८ ॥

वाचसुपाधुलं महादेवदेलाकानि जानी विष्ठापति कचसाधयीषामि ॥ अशोद वनान्मात्रयिषामि ॥
अथ नहं ध्यायामहादेव वरुं इमवाचसुपाधुलं गवत प्रमिहृत्तामनयेलायागिजानकसाधनसावि
धिविष्ठावमजामकुपदसमयसाधनं च ॥ अथ पर्वमधुलं महादेवस्य साधुकाचमदातु ॥ साधुसाधुमहा
देवानकं इष्टमनलापिकमिति ॥ अथ खलुवकुधचमहाकाधाधिपतिविदेवाचन ॥ अथ नहं प्रवक्ष्या
मिजाधमधुलमरुमं चतुचमं चतुर्वाचनं चतुर्वाचनं चतुर्वाचनं ॥ अथ नहं प्रवक्ष्यामि ॥

॥ मन ॥
॥ ६९ ॥

मै ॥ कालासाताकुलादीर्घयुगान्मात्रिसमप्ररुं ॥ रिन्नो जैनमहाकार्यकपालाकुलरूपदीर्घयुग
समहालीमं प्रलाकातिरुचकं ॥ नहं मध्यमहावीडवकुकाधीनिवधयतु ॥ रुगवनीदक्रि (सापा) धर्म
हादेवसमालिखतु ॥ अथाकधवलर्कलाचलाक्रीचपाधुलं ॥ अथ नहं चतुर्जैसोम्यवामलपिठूनरुमं
॥ चापठाकि धर्मयुक्तं रषणसनसमाधिर्न ॥ रुगवनीवामपा (धर्म) नाचायनं ससालिखतु ॥ धर्ममरुत
निरुदहं ॥ चतुर्जैविनाजिर्न ॥ चामलरुसंयुक्तं धीखचक्रगठापर्व ॥ गवूठासनमाचुठं चक्र

日知錄

॥३॥

[illegible]

॥ मन्त्र ॥

1537

गत्यालिनी अथ महर्षि कारुणिनी श्री ॥ अथ न प्रकीर्तिता ॥ आप आवमी महाप आवति ॥ १५५ ॥ व र्धनी
समालिखे ॥ विरूपिणी न क व र्धनी समालिखे ॥ विरूपिणी सूत्र हा विणी न क व र्धनी समालिखे
॥ १५६ ॥ अथ महर्षि कारुणिनी यथा क कुरु समालिखे ॥
॥ अथ ॥ १५७ ॥ ल प्रव ॥ विधि र व ति स र्य व का चार्थ नी ल पूष्य माला विरूप र्धनी ला ॥ १५८ ॥ व र्धनी
॥ १५९ ॥ लील व मु य ग ल प चि व र्धनी ॥ १६० ॥ अथ न द य मि दं बु या न ॥ १६१ ॥ स र्व स त्व हि मा र्थ य का ध सा ध ना स

天

॥ ५५ ॥

[illegible]

॥मन्त्र॥

॥५॥

यथा धर्म इत्याकचयित्वानेनमकुं धारयन् ॥ ॐ प्रविश कोध है ३ आ ४ काला माला कलरीषण
वक आ ४ ॥ आनना चाचिगमायं धावाश्चाव धानक दनपातन सप्तमार्थ रुवति ॥ ॥ अथ रु
न जामचम रुग कुवा ऊ को धम छुल विधिविल ना रुवति ॥ ॐ रु ४ श्री सिं ह ध्वज धा बी दी दी ४
॥ को धस्य पूवग ४ ॥ ॐ है है है म हा पद्मावती ध मूर्धा धा बी दी है ॥ पृष्ठे न ४ ॐ विरुति गुं रु ध
धा वि दी है ज ४ दकि धन ४ ॥ ॐ है रु ४ सूत्र हा वि दी चि नाम धि ध्वज धा बी धि है ॥ वाम न ४ ॥ ॐ

॥ ८८ ॥ श्रीशिवनरानिधी प्रप्यहस्तहं ॥ ८८ ॥ नमः ॥ श्रीवत्सव्यदीधूपहस्तहं ॥ ८९ ॥ अग्न्या ॥ अं विरुषिणी
 ॥ ८९ ॥ गन्धहस्तहं ॥ गन्धहस्तानेन गन्ध्यां जगत्यालिनी दीपहस्तहं ॥ ९० ॥ वायव्यां ॥ अथ वीरु
 निनीमूद्राविधिविरुवा रवति ॥ अथान्यमूर्ध्नि कृत्वा गऊं न्याव ह्ययं गृहि हृद्यजमूद्रा ॥ १ ॥
 दक्षिणहस्तमूर्ध्नि कृत्वा गऊं ती प्रसार्य कृकेयं दक्षिणमूद्रा ॥ २ ॥ अथान्यमूर्ध्नि कृत्वा
 ऊनिप्रसार्य वामकटिदक्षिणस्काप्यधनूर्वा मूद्रा ॥ ३ ॥ वामहस्तमूर्ध्नि कृत्वा मध्यमां प्र

॥ मन ॥
 ॥ ८९ ॥

सार्यविनामशिधजमूद्रा ॥ ४ ॥ अथ पूर्वमूद्रा रवति ॥ उस्मानम अर्लि कृत्वा गऊं ती
 ह्ययं कृकेयत्पूषमूद्रा ॥ ५ ॥ अथान्यमूर्ध्नि कृत्वा अंगुली वरुणगऊं ती ह्ययं प्रसानवधु
 पमूद्रा ॥ ६ ॥ अथान्यमूर्ध्नि प्रसार्य दवाहमूलस्काप्यधनूर्वा मूद्रा ॥ ७ ॥ दक्षिणह
 स्तमूर्ध्नि मध्यममूर्ध्नि कृत्वा मध्यमां ऊर्लि प्रसानवधु पमूद्रा ॥ ८ ॥ अथान्यमूर्ध्नि कृत्वा मध्यमां
 हस्तमूर्ध्नि कृत्वा मध्यमां मूलविधिविरुवा ॥ ९ ॥ अथान्यमूर्ध्नि कृत्वा मध्यमां मूलविधिविरुवा

॥ हूँ ॥ अथ साधनविधिविस्तारवर्णि॥ हूँ हूँ ओं ओं ज॥ अथ नाजिगाथाओं हूँ ज॥ अजिगाथाओं हूँ ज॥
॥ ५७ ॥ पूवदा॥ ओं हूँ ज॥ आपूवदा॥ ओं हूँ ज॥ अथ नाधिपति॥ ओं हूँ ज॥ कुलध॥ ओं हूँ ज॥ हूँ
 ठा॥ ओं आ॥ हूँ ज॥ किं क॥ बी॥ हूँ ज॥ अथ नाधिपति॥ ओं हूँ ज॥ अथ ना॥ ५७ पनाजिगा
 धनेरुवनि॥ श्रीवज्रधनस्य पूवनालकैजप॥ पूर्वमवाहनारुवनि॥ नमः पूरुमासीउदावीपूजीकृ **॥ मन ॥**
 त्वा॥ नरुकरुध्रगुडपायसकीचपायसैर्य॥ कौपूजय॥ गुग्गुर्धूपैरुत्तासकलवाडिजप॥ **॥ ५७ ॥**

यत्कर्मनियममागच्छति॥ यदिवागच्छति न कदापि॥ अथ ना॥ हूँ मार्गयति॥ किंमयाकर्तव्यमि
 ति॥ साधकैरवकवीदि॥ ॥ अथ ना॥ हूँ मार्गयति॥ किंमयाकर्तव्यमि
 ददाति॥ सर्वशुविग्रहैकनामि॥ अथ ना॥ हूँ मार्गयति॥ किंमयाकर्तव्यमि
 ति॥ सफकल्यानूजीवति॥ १ ॥ अथ ना॥ हूँ मार्गयति॥ किंमयाकर्तव्यमि
 जप॥ दिवसानि सफ॥ सफनदिवस॥ उदावीपूजाकृत्वा यथावलिदानबीगुग्गुर्धूपैरुत्ताजप॥

॥रु॥

॥उ॥

ऊपा नानियरुमाग कृति ॥ हा साध क किं मया करुवी ॥ साध केन व क संयानि ॥ दिव्य कामि क हा ज
ददाति प्रमिदिने न व के वस्तु युगल ददाति ॥ प के दिना जो प्रय कृति र्च व र्च ॥ कानि जीव यानि ॥
४ ॥ अथ ठी ॥ नाधि पमि साधने रु वति ॥ नाडी ॥ म ॥ न गत्वा ॥ २२ स रु मुं ज प दिव सा नि स फ २ स फ
म दिव स प्र रु ती म त्म मा स म्नु ठि का ल र क द धि गू ड धू प रु ली रु ली का य ॥ थ कं ज प गू गू गू नू धू
पे द त्वा ऊ प द रु ना प्रे या व रु ती ॥ २२ ना ड हा हा का न २ २ य न ॥ न नी न रु व र्च स ग द प वि वा न ॥

॥म॥

॥उ॥

प वि रु ती आ ग कृति ॥ आ ग ना य व लि द द्या न रु २ व ति ॥ सर्व रु रु किं क ना रु व ति दि न दि न वा खो दी
ना ना त्म य कृति ॥ सर्व ॥ अ प्र म द्या क य ति ॥ व र्च स रु मुं जि व र्च ति ॥ ५ ॥ अथ रु ली ॥ व सा ध ने रु व ति ॥
द वा य न न ग त्वा न क ग न्ध व रु रु स म गू र्ग नू धू र्पे द त्वा ॥ २२ ज य त्प र्च स वा रु मा रु व ति ॥ ना डी रु रु
च रु र्द ॥ म त्म मा स म्नु ठि का न क र कं य था वि धि ना व लि द प र्थ रु ॥ रु रु धू र्पे द त्वा ऊ प
या व द रु ना डी रु ती म हा क लि रु ती ष ॥ कृ ति ना ग कृति ॥ रु ती या व रु पी ली क न क मी दि क ना मि

॥ ६८ ॥ प्रहृष्टिकिं कर्माधिक्यं वा मिश्रं दिव्यकामिकं राजनं वदन्ति ॥ पृष्ठमात्रं पयस्वर्गमपि नयति ॥ पुन
 ॥ ६९ ॥ नपि नाशं ददाति ॥ पंचैव वर्षं सहस्रादि जीवयेति ॥ ॥ इति श्री कृष्ण उपायसंग्रहोक्तं ॥
 किं कथमाधनविधिविरक्तं ननु ॥ ॥ अथ कथं प्रवक्ष्यामि नानासिद्धिप्रसाधनं ॥ आचार्या
 नीहिगार्थं यथैव ॥ कैकिं कथं शृणु ॥ नमो यन्मानुषं देवमालंघ्य पापकांतिं ॥ मृषावादादि क
 शीलाद्येदं विद्रागपीठिता ॥ स्वल्पापुष्पलविक्राधनं कुर्यात्मानुषं लज्जं ॥ हाहा स्वल्पं कथं प

॥ मच ॥
 ॥ ७९ ॥

नापि हि रागधने यथामयसायदासिद्धिमन्त्राय देवना ऊं सिद्धि ॥ किं पुन मानुष्यनाजानीनि धनानि
 नथैव च ॥ देवकन्यापि सिद्धिं कुरु कुरु ॥ मातृकैः ॥ पठित्वा सिद्धिमन्त्रायै श्रीसुसिद्धियथास्वरूपं ॥ अ
 मृतकहीनवीर्यादीं सर्वसुखसम्पदा ॥ चतुश्चक्रमहागुरुं सिद्धिर्मे पदददये ॥ सकृत्पठित्वा मातृकं सिद्धि
 कनाप्रसं ॥ य ॥ ॥ इति श्री कृष्ण उपायसंग्रहोक्तं ॥
 अथ कथं कथं मन्त्रमहातनुना ऊं ॥ रुगानीमूडालकदीर्घवति ॥ अन्यान्वीगुलि वक्ष्यामि मातृकं

॥ १ ॥ लो प्रसार्य ध्याय च ध्याय यद्वा ॥ अप वाजिताम हारुत वाजस्य मूद्रा ॥ १ ॥ अस्या नवम मूद्रया म
 ॥ २ ॥ ध्याय ॥ लो प्रव ध्याय नृ नी प्रसार्य कृ के यद्वा ॥ अजिताम मूद्रा ॥ २ ॥ अस्या नवम मूद्रया नृ नी
 कृ के लि कृत्वा कनि श्री प्रसार्य पृथ कृथ कृ पूव ध्याय मूद्रा ॥ ३ ॥ अस्या नवम मूद्रया नृ नी
 कृ व ध्याय ॥ अप ध्याय मूद्रा ॥ ४ ॥ अस्या नवम मूद्रया ४ कनि द्वि की ४ वि कृत्वा ॥ ध्याय ॥ नाधि ॥ मव ॥
 पृथ मूद्रा ॥ ५ ॥ अस्या नवम मूद्रया अग्र शेषा ध्याय ४ ॥ हारुत ध्याय मूद्रा ॥ ६ ॥ अस्या नवम मूद्र ॥ ॥ २ ॥

या श्रुत ॥ शेषा ध्याय प्रव ध्याय कनि द्वि की प्रसार्य पृथ कृथ कृ या जय यद्वा ॥ कृ लि ध्याय मूद्रा ॥
 ॥ १ ॥ सी पू प के लि कृत्वा नृ नी ध्याय कृ व यद्वा ॥ ॥ वि कृ वा नृ म मूद्रा ॥ २ ॥ ध्याय ॥
 हारुत मव महान नृ वा ज ॥ अर्ता हारुत नी मूद्रा ल कृ ध्याय मूद्रा ॥ ॥ अस्या नवम मूद्रया शिर्षा
 धि पान नृ ग व नृ म मर वा च नृ ॥ वजा वा र्या हि नार्थ य उग्र हारुत य कसा धर्त ॥ ध्याय ॥ अस्या नवम मूद्रया
 ना वजा वा र्य ध्याय ध्याय ॥ अस्या नवम मूद्रया नी मात नृ जा प म मूद्रा ॥ अस्या नवम मूद्रया

॥ १॥ ॥ वाङ्मयोरुत्तिनीसाधनविधिविस्तारवति ॥ श्री हं ॥ श्री धाधिपतिरुगवतः ४ पूवगा लरुं ऊपु
॥ २॥ ॥ पूर्वसंवाकतारुवति ॥ नरु ४ पूवर्तमासायथाविधयन ४ प्रकीकृत्वागर्गुनुधुपंदत्वासकलनादि
ऊपु ॥ नरु ४ प्रराकं नियन मागकृति ॥ आगयाध्वन्दनादक नाधीदय ४ स्वाग नविव कृत्वा ॥ सा
धककिंमाह्लापयसीतिवदति ॥ साधकनवक र्वा र्या र्वा रुवस्व ॥ नगा दिव्यनसवसायनकमिक **॥ मव ॥**
राजनंददाति ॥ सिद्धि इवनिधनानिचा र्थ वलरु ॥ श्री मसा धनीविधिप्रथमः ॥ ॥ अथ ॥ ३ ॥

पुनरपिह ० साधनरुवति ॥ रुर्जपुर्ण कूर्कमनशीरुगिति महिलिखनाथी ॥ वाकन एता रुत्वा
वक्रधनस्यपूवगा २ रुसंरुर्ज ऊपु ॥ श्री पुमागकृति ॥ आगताया कामयिगव्य रुद्वारुवति ॥ वा र्थ
ददाति ॥ ४ कलमायिददाति ॥ ५ रुमा नी प्य ३ वलोकमापिनयति ॥ वर्षस रुप्रपिजीव्यति ॥ यदि
नसिद्धति नदा अरुि सुर्धिसू पमिसि यन वातल्लुदा ॥ ॥ अथ ॥ ४ ॥ रुत्तिनीसाधनविधिवि
स्तारवति ॥ पूर्ववत्तुलं लिख्यमान ॥ रुचयी ऊपु ॥ रुदात्मावयनरुतिस्वर्यका धनरापिर्न

